LLF Language and Learning foundation
Strong Foundation, Stronger Future

कहानी कथन उत्सव

शिक्षा और लोकसंस्कृति का संगम

बस्तर, छत्तीसगढ़

कहानी कथन उत्सव

शिक्षा और लोकसंस्कृति का संगम

बस्तर में स्कूल-समुदाय की सहभागिता से
बहुभाषी शिक्षा का विस्तार

(बस्तर, छत्तीसगढ़ शिक्षा विभाग की पहल)

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन
नई दिल्ली

आभार

बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम- नींव के तहत शुरू की गई यह पहल- कहानी कथन उत्सव- अन्य बहुभाषी कार्यक्रमों के लिए प्रेरणास्रोत है। इस पहल से निकली कहानियों ने बच्चों में भाषायी कौशलों का विकास करने में बहुत मदद की है।

हम यह उम्मीद करते हैं कि यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा और स्कूल से समुदाय को जोड़ने वाली यह कड़ी भविष्य में और मजबूत होगी।

हम उन सभी कहानी वाचकों, शिक्षकों और बच्चों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने विभिन्न विद्यालय समूहों में इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और शिक्षण में उपयोग होने वाली कहानियों को दस्तावेज़ के रूप में संकलित किया। हम जिला कलेक्टर और शिक्षा अधिकारियों के प्रति भी विशेष धन्यवाद प्रकट करते हैं, जिनके अमूल्य सहयोग से इस पहल को बढ़ावा मिला और इसे जारी रखने में सहायता मिली, जिससे विद्यालय और समुदाय के बीच संबंध और मजबूत हुए। अंत में हम नींव बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के सभी कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करते है जिन्होंने इसे जमीनी स्तर पर सफल बनाने में अपना योगदान दिया।

भूमिका

कहानी सुनना और सुनाना मानव सभ्यता का एक स्वाभाविक हिस्सा रहा है। चाहे वह प्राचीन शैल चित्रों में उकेरी गई झलकियाँ हों या आधुनिक डिजिटल और मुद्रित कहानियाँ, हर युग में इंसानों ने अपनी परिस्थितियों के अनुसार इस परंपरा को अपनाया और संजोया है। पारंपरिक समाजों में यह मौखिक रूप में पनपी, जबकि आधुनिक समाज में मुद्रित और डिजिटल माध्यमों में इसकी लोकप्रियता बढ़ी है।

कहानी सुनाने की कला को शिक्षा में एक प्रभावी उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया है। यह बच्चों को भाषा और ज्ञान के विशाल संसार से जोड़ती है, जिससे उनकी शब्दावली, व्याकरण और समझने की क्षमता विकसित होती है। साथ ही, यह उनकी बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की दक्षताओं को भी निखारती है। जब एक शिक्षक किसी कहानी को भावनात्मक रूप से सुनाता है, तो बच्चे केवल श्रोता नहीं रहते, बल्कि वे पात्रों के साथ संवाद करते हैं, उनके संघर्षों को महसूस करते हैं और उनकी भावनाओं को आत्मसात करते हैं।

कहानी सुनना बच्चों की कल्पनाशक्ति को विस्तार देता है। वे केवल शब्दों को नहीं सुनते, बल्कि उन शब्दों के पीछे छिपी दुनिया को अपने भीतर उकेरते हैं। वे पात्रों, घटनाओं और परिवेश की कल्पना करते हैं और कहानी के भीतर मौजूद चुनौतियों के समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। इस प्रक्रिया में, वे समस्या-समाधान कौशल विकसित करते हैं और आलोचनात्मक चिंतन को अपनाते हैं। कहानियाँ संघर्षों और नैतिक दुविधाओं को प्रस्तुत करती हैं, जिससे बच्चे गहराई से सोचने और विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने के लिए प्रेरित होते हैं।

कहानी कहने की यह प्रक्रिया शिक्षा को आनंदमय और प्रेरणादायक बनाती है। यह केवल भाषा कौशल का विकास नहीं करती, बल्कि बच्चों को सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक परंपराओं से भी जोड़ती है। कहानी के माध्यम से बच्चे अपनी पहचान को समझते हैं, अपने समुदाय की परंपराओं को अपनाते हैं और नई संभावनाओं की ओर कदम बढ़ाते हैं। इस तरह, कहानी कहने की कला भाषा कौशल, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सांस्कृतिक समझ, सामाजिक दक्षताओं और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करने का एक समग्र दृष्टिकोण बन जाती है।

बस्तर में कहानी-कथन उत्सव

बस्तर के सुदूर गाँवों में, जहाँ शिक्षा और समुदाय के बीच संवाद की संभावनाएँ सीमित थीं, छत्तीसगढ़ शिक्षा विभाग की पहल के तहत बहुभाषी शिक्षा (Multilingual Education)

कार्यक्रम 'नींव' के अंतर्गत कहानी-कथन उत्सव का आयोजन किया गया। यह उत्सव बस्ता-विहीन दिवस (Bagless Day) पर आयोजित होता है, जब स्कूल की घंटियाँ केवल किताबों और पाठ्यक्रम की सूचना नहीं देतीं, बल्कि बच्चों के कानों में कहानियों की गूँज भरती हैं। स्कूलों में समुदाय के सदस्य बच्चों को अपनी संस्कृति से जुड़ी ऐसी कहानियाँ सुनाते हैं, जो कहीं लिखी नहीं होती हैं। वे समुदाय की मौखिक परंपरा का हिस्सा होती हैं। इस दौरान 6 से 14 वर्ष की उम्र के बच्चे ध्यानपूर्वक कहानियाँ सुनते हैं, उन्हें अपने शब्दों में लिखते है और अपने रंगीन चित्रों से उन्हें जीवंत बना देते हैं।

समुदायों से सैकड़ो सदस्य अपनी कहानी सुनाने के लिए स्कूलों में आए और अपने गाँव, लोककथाओं व अनुभवों को बच्चों के साथ साझा किया। कहानी कथन उत्सव से संग्रहीत कहानियों का संग्रह तैयार करना और अन्य सहायक शिक्षण सामग्री विकसित कर कक्षा में उसका उपयोग करना, सामुदायिक ज्ञान को स्कूली ज्ञान से जोड़ने की दिशा में एक ठोस प्रयास है। इससे प्रथम पीढ़ी के बच्चे अपने स्कूल के बाहर के ज्ञान को स्कूली ज्ञान से प्रभावी रूप से जोड़ पाते हैं।

यह दस्तावेज बस्तर में आयोजित कहानी-कथन उत्सवों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। अकादमिक वर्ष 2022-23 से शुरू हुई इस पहल ने स्कूलों में शिक्षा और समुदाय के बीच संवाद को एक नया रूप दिया है।

पिछले तीन वर्षों में कहानी कथन उत्सव बस्तर जिले के 1100 से ज्यादा स्कूलों में आयोजित किया गया है। इन स्कूलों के 10000 से अधिक बच्चे इन आयोजनों में हिस्सा ले चुके हैं। इन आयोजनों में 1000 से ज्यादा कहानी-वाचकों ने बच्चों को उनकी पसंद की कहानियाँ सुनाई हैं। 1100 से ज्यादा शिक्षकों और संकुल समन्वयकों ने मिलकर अपने-अपने स्कूलों में कहानी कथन उत्सव का आयोजन किया जिसमें समुदाय के 5000 से अधिक सदस्य हिस्सा लेने आए। इन आयोजनों से समुदाय की लगभग 700 से अधिक ऐसी कहनियाँ लिखित रूप में मिली हैं जो पहले केवल मौखिक परंपरा में ही उपलब्ध थीं।

यह उत्सव केवल संख्या तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने शिक्षा और समुदाय के बीच एक जीवंत रिश्ता कायम किया। इस कार्यक्रम ने न केवल बच्चों की भाषा और साक्षरता कौशल को सशक्त किया, बल्कि उनके माता-पिता और बुजुर्गों को भी स्कूलों से जोड़ा। पहली पीढ़ी के बच्चों के परिवार, जो खुद कभी स्कूल नहीं गए, वे अब अपने बच्चों की शिक्षा में भागीदार बनने लगे। वे यह देखने लगे कि कैसे एक साधारण सी कथा भी बच्चे की भाषा अधिगम को गहराई प्रदान कर सकती है। इस तरह के बहुत सारे यह बदलाव वर्तमान में टुकड़ों में दिख रहे हैं जो

शिक्षा और समुदाय को जोड़ने वाली एक नई शुरुआत की तरफ इशारा कर रहे है। यह रिपोर्ट इस पूरी यात्रा का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। हजारों बच्चे कहानी सुनने, उसका अर्थ निकालने, चित्र बनाने, पढ़ने और अपनी मातृभाषा व द्वितीय भाषा में कहानियों को पुनः सृजित करने में गहरी रुचि लेने लगे हैं।

इस कार्यक्रम के आयोजन के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली की मौखिक परंपराओं की पुनर्रचना का एक प्रयास किया गया है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप है। आज कहानी-कथन उत्सव केवल साक्षरता बढ़ाने का एक साधन नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव बन चुका है, जो स्कूल और समुदाय के बीच पुल का कार्य कर रहा है। ग्रामीण बस्तर के लोक जीवन में व्याप्त कहानियां अब केवल बच्चों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्कूली शिक्षा के साथ जुड़कर स्कूल-समाज के संबंधों को पुनर्परिभाषित कर रही है।

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन

कहाँ क्या है

संक्षिप्ताक्षरों की सूची 10

मानचित्रों व सारिणियों की सूची 10

सार संक्षेप 11

1. बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम में कहानी कथन उत्सव 14

1.1. बस्तर जिला: समृद्ध विविधता और शैक्षिक चुनौतियों का क्षेत्र 15

1.2. बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम: नींव 18

1.3. कहानी कथन उत्सव: उद्देश्य, अपेक्षित परिणाम 20

2. कहानी कथन उत्सव के आयाम 24

2.1. समाज में कहानी की भूमिका एवं कार्य 25

2.2. कहानी कथन से बच्चों में कौशलों का विकास 29

2.3. लोक संस्कृति की कहानियों को शाला शिक्षा में लाना 30

3. कहानी कथन उत्सव: योजना, तैयारी और क्रियान्वयन 36

3.1. नींव कार्यक्रम में कहानी कथन उत्सव से जुड़े सभी हितधारकों की भूमिका 36

3.2. कहानी-कथन उत्सव की तैयारी : पहला चरण 39

3.3. कहानी-कथन उत्सव की तैयारी : दूसरा चरण 41

3.4. कहानी-कथन उत्सव का दिन 45

कहाँ क्या है

4. मुख्य निष्कर्ष और सीख 48

4.1. मुख्य निष्कर्ष 49

4.2. भविष्य की दिशाएँ एवं संस्तुतियाँ 52

परिशिष्ट 54

परिशिष्ट-1: 54

कहानी-कथन उत्सव के नोडल केंद्र और संबंधित स्कूलों की सूची

परिशिष्ट-2: 60

कहानी कथन उत्सव की तैयारी हेतु आयोजित कार्यशाला रिपोर्ट
नीव: बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम, जिला बस्तर, छत्तीसगढ़

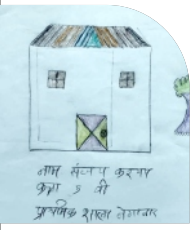

परिशिष्ट-3: 68

कहानी कथन उत्सव के नोडल केंद्र के शिक्षक-समन्वयकों के लिए आयोजित कार्यशाला की सत्र योजना

परिशिष्ट-4: 70

बच्चों की कहानियों और चित्रों के संकलन के नमूने

परिशिष्ट-5: 73

कहानी कथन उत्सव की कुछ अन्य झलकियाँ

ग्रन्थ सूची (Bibliography) 83

संक्षिप्ताक्षरों की सूची

ASER	Annual Status of Education Report
CAC	Cluster Academic Coordinator (संकुल अकादमिक संयोजक)
BAC	Block Academic Coordinator (विकासखंड अकादमिक संयोजक)
DAC	District Academic Coordinator (जिला अकादमिक संयोजक)
DIET	District Institute of Education and Training
LLF	Language and Learning Foundation (लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन)
HM	Home Language (बच्चों की घर की भाषा)
L1	Language 1 / बच्चों की प्रथम भाषा
MLE	Multilingual Education (बहुभाषी शिक्षा)
NEP	National Education Policy (नई शिक्षा नीति)
NCF	National Curriculum Framework (राष्ट्रीय पाठ्चर्या रूपरेखा)
TLM	Teaching Learning Material (शिक्षण-अधिगम सामग्री)

मानचित्रों व सारिणियों की सूची

चित्र 1 : बस्तर का मानचित्र

तालिका 3.1 : कहानी कथन उत्सव में सभी हितधारकों की भागीदारी

सार संक्षेप

बस्तर जिले की शिक्षा व्यवस्था में स्थानीय भाषाओं और संस्कृति की भूमिका को मजबूत करने के उद्देश्य से लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन (LLF) छत्तीसगढ़ सरकार के सहयोग से नींव बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत कहानी कथन उत्सव का आयोजन वर्ष 2022 से कर रही है। यह उत्सव स्थानीय ज्ञान को बच्चों की भाषा में शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने के तरफ किया जाने वाला अपने तरह का एक अनूठा प्रयास है। यह प्रयास समुदाय और स्कूल के सम्बन्ध को नए आयाम देने और बच्चों को उनके घर की भाषा में बोलने और समझने के ज्यादा से ज्यादा अवसर देने के बहुत सारी कोशिशों में एक और कोशिश है।

बस्तर जिला अपनी सांस्कृतिक और भाषायी विविधता के लिए जाना जाता है। यहाँ कई आदिवासी भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन स्कूलों में मुख्य रूप से हिंदी भाषा में पढ़ाई होती है। इससे बच्चे खुद को स्कूल की भाषा से अलग महसूस करते हैं। कहानी कथन उत्सव इस दूरी को कम करने का एक प्रयास था, जिसमें बच्चों को उनकी अपनी भाषा में कहानियाँ सुनाई गईं और उन्हें अपने शब्दों में कहानी लिखने और चित्र बनाने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में कहानी कथन उत्सव को बस्तर के 200 स्कूलों में आयोजित किया गया। हर पाँच स्कूलों के समूह में एक नोडल स्कूल बनाया गया, जहाँ मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। शिक्षक, कहानी वाचक और गाँव के बुजुर्गों को इस आयोजन से जोड़ा गया। गाँव के बुजुर्गों और पारंपरिक कहानी वाचकों को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने बच्चों को कहानियाँ सुनाईं। इसके बाद, बच्चों को उन कहानियों पर चित्र बनाने और अपनी भाषा में लिखने का मौका मिला।

इस पहल से बच्चों में भाषा सीखने की रुचि बढ़ी। उन्होंने कहानी सुनकर नए शब्द सीखे और अपने विचारों को शब्दों और चित्रों में व्यक्त करना सीखा। समुदाय की भागीदारी पहले साल की तुलना में दूसरे और तीसरे साल में और अधिक बढ़ी। माता-पिता और गाँव के बुजुर्गों को यह समझ में आया कि उनकी पारंपरिक कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षा का एक अनमोल साधन हैं। इससे स्कूल और समुदाय के बीच की दूरी भी घटी और बच्चों की शिक्षा में परिवार की भागीदारी बढ़ी।

इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण नतीजा यह रहा कि बच्चों ने अपनी सांस्कृतिक जड़ों को समझना शुरू किया। कई बच्चों ने घर पर अपने माता-पिता से पुरानी कहानियाँ पूछनी शुरू कर दीं। कई स्कूलों में शिक्षकों ने बच्चों द्वारा लिखी कहानियों को पोस्टर के रूप में कक्षा में लगाया। यह स्थानीय भाषा और संस्कृति को स्कूल की शिक्षा से जोड़ने की दिशा में एक बड़ा कदम था।

हालाँकि, इस पूरी प्रक्रिया में कुछ चुनौतियाँ भी आईं। स्कूलों की औपचारिक भाषा और बच्चों की घर भाषा के बीच का अंतर एक बड़ी समस्या थी। स्कूलों में पढ़ाई की भाषा संरचित और औपचारिक होती है, जबकि लोककथाएँ सरल और बोलचाल की भाषा में होती हैं। इससे शिक्षकों को इन कहानियों को पाठ्यक्रम में शामिल करने में कठिनाई हुई।

इस आयोजन को और बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव भी सामने आए। इसमें प्रमुख थे– स्थानीय कहानियों को व्यवस्थित रूप से दस्तावेज़ीकृत किया जाना ताकि उन्हें बच्चों की किताबों और पाठ्य सामग्रियों के रूप में इस्तेमाल किया जा सके। शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया जाना, जिससे वे बहुभाषी शिक्षा को बेहतर तरीके से लागू किया जा सकें।

गाँव के बुजुर्गों और पारंपरिक कहानीकारों को औपचारिक रूप से स्कूली गतिविधियों का हिस्सा बनाना, जिसमें समुदाय और स्कूल के बीच का संबंध और मजबूत हो सकें। स्कूलों में स्थानीय कहानियों को स्थायी रूप से पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने के लिए नीतिगत बदलाव की भी जरूरत होगी।

जमीनी स्तर पर इस उत्सव के आयोजन और उसके बाद के परिणामों ने इस विचार को मजबूत किया कि अगर स्थानीय भाषा और संस्कृति को शिक्षा से जोड़ने से बच्चों का सीखने का अनुभव और समृद्ध हो सकता है। इस पहल से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा, समुदाय की भागीदारी स्कूलों में बढी, शिक्षकों की स्थानीय कहानियों और भाषा को कक्षा में शामिल करने का आत्मविश्वास आया। सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह रहे की अभिभावक बच्चे एवं शिक्षक सभी स्थानीय सांस्कृतिक और भाषायी दुनिया को एक शैक्षणिक संसाधन के रूप में देखने लगे।

हालाँकि, इसे और प्रभावी बनाने के लिए निरंतर प्रयासों और संसाधनों की जरूरत होगी। अगर इसे अन्य स्कूलों और राज्यों में भी लागू किया जाए, तो यह पूरे देश में बहुभाषी शिक्षा को सशक्त बनाने की दिशा में एक प्रभावी मॉडल बन सकता है।

बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम में कहानी कथन उत्सव

1

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन (LLF) भारत में स्कूली शिक्षा में काम करने वाली एक अग्रणी संस्था है। वर्तमान भारत में स्कूली शिक्षा एक गंभीर चुनौती से गुजर रही है। अधिकांश बच्चे पाँचवीं तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद भी भाषा और गणित की बुनियादी समझ हासिल नहीं कर पाते, जिससे उच्च कक्षाओं में पढ़ाई उनके लिए कठिन हो जाती है। यह अधिगम संकट (Learning Crisis) वंचित समुदायों से आने वाले बच्चों की शिक्षा यात्रा को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है, जो पहले से ही शैक्षिक रूप से हाशिये पर होते हैं। लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन की स्थापना स्कूली शिक्षा में व्याप्त इसी अधिगम संकट को व्यापक पैमाने पर हल करने के उद्देश्य से 2015 में की गई थी। इस दूरगामी लक्ष्य के साथ लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन वर्तमान में भारत के कई राज्यों में राज्य सरकार के साथ काम कर रही है।

बस्तर जिला वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण-मध्य हिस्से में स्थित है। घने वनों से आच्छादित बस्तर एक आदिवासी बाहुल्य जिला है। शैक्षणिक दृष्टि से यह शिक्षा के अधिकांश सूचकांकों में पिछड़े जिलों में गिना जाता है। बस्तर के सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषायी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन छत्तीसगढ़ राज्य सरकार के साथ मिलकर इस जिले में बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम 'नींव' के तहत ग्रामीण बस्तर के बच्चों के अधिगम परिणामों में सुधार लाने के लिए कार्य कर रही है।

वर्तमान स्कूली शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान की संरचना प्रायः ऊपर से नीचे (Top-Down) मॉडल पर आधारित होती है। इस मॉडल में स्कूली शिक्षा में क्या पढ़ाना है, यह तय करने का अधिकार विषय विशेषज्ञों के पास होता है, जिसमें स्थानीय या जमीनी स्तर के अनुभव, ज्ञान और सांस्कृतिक परंपराओं को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। 'नींव' बहुभाषी शिक्षा (MLE) कार्यक्रम में

समुदाय से जुड़ाव की रणनीतियों के माध्यम से स्थानीय ज्ञान, भाषा और सांस्कृतिक परंपराओं को प्रारंभिक कक्षाओं में शामिल करने की कोशिश की गई है। इसके लिए कार्यक्रम में समुदाय से जुड़ाव के लिए दो प्रमुख रणनीतियाँ– कहानी कथन उत्सव का आयोजन और शाला संग्रहालय की स्थापना–डिज़ाइन की गई थीं।

कार्यक्रम के प्रारंभ से ही जमीनी स्तर पर कहानी कथन उत्सव का आयोजन व्यापक पैमाने पर किया गया है यह दस्तावेज 'नींव' बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के तहत कहानी कथन उत्सव के आयोजन की प्रक्रियाओं, सफलताओं और चुनौतियों को प्रस्तुत करती है।

1.1 बस्तर जिला: समृद्ध विविधता और शैक्षिक चुनौतियों का क्षेत्र

बस्तर जिला मध्य भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण मध्य में स्थिति एक जिला है. इस जिले का जिला मुख्यालय जगदलपुर है. कुछ साल पहले तक अविभाजित बस्तर जिला क्षेत्रफल की दृष्टि से ना केवल छत्तीसगढ़ (2001 से पहले अविभाजित मध्य प्रदेश) बल्कि भारत का सबसे बड़ा जिला था। पहले का बस्तर जिला वर्तमान में सात जिलों में विभाजित है– बस्तर, कांकेर, दांतेवाडा, नारायणपुर, बीजापुर, कोंडागांव एवं सुकमा. वर्तमान में बस्तर जिले का कुल क्षेत्रफल 6,597 वर्ग किलोमीटर है। जनसंख्या की दृष्टि से बस्तर एक आदिवासी बहुल जिला है। जिले के मुख्य जनजातीय समूह गोंड, मरिया, मुरिया, भतरा और धुर्वा है।

बस्तर जिला जैव विविधताओं से समृद्ध है. विश्व प्रसिद्ध चित्रकोट जलप्रपात बस्तर जिले में स्थिति है। जिले का ज्यादतर हिस्सा घने वनों से आच्छादित है। बस्तर जिला खनिज संपदा से परिपूर्ण है। जिले में चूनापत्थर, डोलोमाईट, एवं बाक्साईट इत्यादि की खाने हैं। इन्द्रावती और उसकी सहायक नदियाँ जिले में उपजाऊ जमीन का विशाल मैदान बनाती हैं जिसमें धान की सघन खेती होती है। ज़्यादातर जनसंख्या आजीविका के लिए खेती और वनोपज पर आश्रित है।

बस्तर जिला भाषायी रूप से विविध है, जहाँ सात मुख्य भाषाएँ बोली जाती हैं। हल्बी मुख्य संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है और जनसंख्या का 38.39% हिस्सा इसे बोलता है। अन्य प्रमुख भाषाओं में भतरी (26.82%), गोंडी (14.55%), हिंदी (10.75%), धुरवी (2.99%), छत्तीसगढ़ी (2.62%), और ओड़िया (1.14%) शामिल हैं।

बस्तर जिले की शैक्षिक स्थिति

जिला जनगणना पुस्तिका (District Census Handbook) के अनुसार बस्तर जिला भारत के शैक्षिक रूप से सबसे पिछड़े जिलों में से एक है। यहाँ की कुल साक्षरता दर 54.4% है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 64.82% और महिला साक्षरता दर 44.26% है। छत्तीसगढ़ राज्य (कुल साक्षरता दर 70.28%, पुरुष साक्षरता दर 80.27% और महिला साक्षरता दर 60.24%) और राष्ट्रीय स्तर

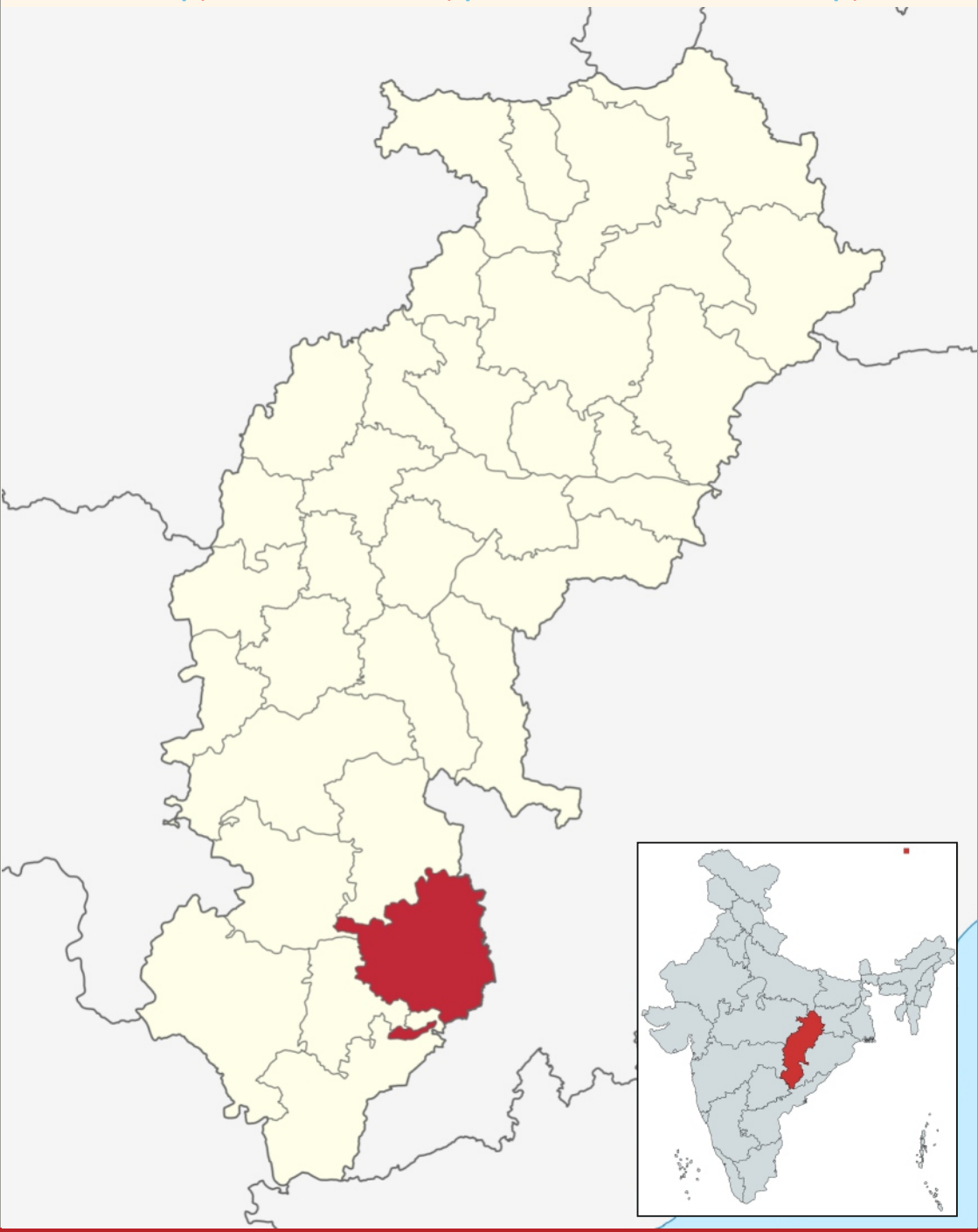

(कुल साक्षरता दर 74.04%, पुरुष साक्षरता दर 82.14% और महिला साक्षरता दर 65.46%) की तुलना में, बस्तर की साक्षरता दर छत्तीसगढ़ के औसत से 15.88% अंक और राष्ट्रीय औसत से 19.64% अंक कम है।

इसके अतिरिक्त, बस्तर में साक्षरता में लैंगिक असमानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यहां पुरुष साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से 15.45% अंक कम है, जबकि महिला साक्षरता दर 21.2% अंक कम है। यह आंकड़े जिले में शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त गहरी असमानताओं और चुनौतियों को उजागर करते हैं।

यह शैक्षणिक पिछड़ापन बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन में भी झलकता है। असर रिपोर्ट 2018 में छात्रों की मूलभूत साक्षरता और अंकगणितीय कौशल पर जिला-स्तरीय आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। इस रिपोर्ट के अनुसार, बस्तर जिले में केवल 37.2% बच्चे (कक्षा 3 से 5) कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं, जो राज्य के औसत 45.5% और राष्ट्रीय औसत लगभग 50% से काफी कम है। लगभग यही स्थिति असर (ASER) रिपोर्ट 2022 में भी रही और जिले के केवल 37% बच्चे (कक्षा 3 से 5) कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ पा रहे थे। यह प्राथमिक स्तर पर साक्षरता कौशल विकसित करने में गंभीर चुनौतियों को रेखांकित करता है।

इस चुनौतीपूर्ण शैक्षिक परिदृश्य में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए एक अधिक व्यापक एवं समावेशी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। ऐसा दृष्टिकोण, जो बस्तर की सांस्कृतिक और भाषायी विविधता को संसाधन के रूप में स्वीकार करे और उसे कक्षागत प्रक्रियाओं से प्रभावी रूप से जोड़े, ताकि बच्चे कक्षा में आत्मविश्वास और सशक्तता महसूस करें और उनके सीखने के परिणामों (लर्निंग आउटकम) में गुणात्मक सुधार लाया जा सके। बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम इस दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रारंभिक कदम है।

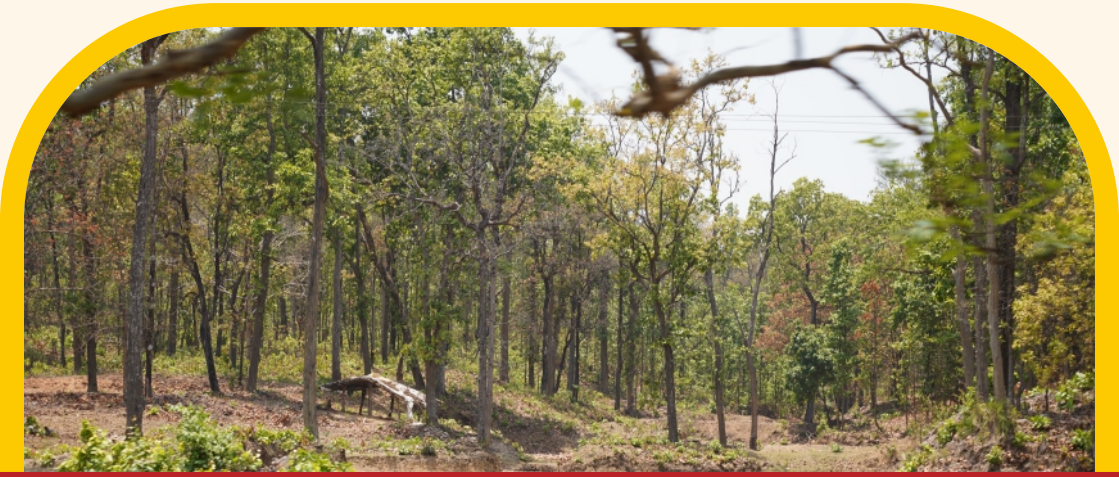

1.2 बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम: नींव

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन छत्तीसगढ़ राज्य सरकार के साथ मिलकर बस्तर जिले में वर्ष 2022 से बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम 'नींव' संचालित कर रही है। लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के इस कार्यक्रम की संकल्पना संस्था की बहुभाषी कार्यक्रम के अनुभव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बच्चों की मातृभाषा के उपयोग की स्वीकार्यता, छत्तीसगढ़ राज्य में किए गए भाषायी सर्वेक्षण और बस्तर क्षेत्र में अपने पूर्व के कार्यों और जमीनी हकीकत से प्राप्त अंतदृष्टि को ध्यान में रखकर की गई थी।

संस्था वर्ष 2019 से राजस्थान के डूंगरपुर जिले में बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम 'अजुवारु' का संचालन कर रहा था, जिसमें बच्चों के घर की भाषा के स्कूल में प्रयोग से बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सकारात्मक परिणाम मिले। वर्ष 2020 में आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी बच्चों की घर की भाषा का स्कूल में संसाधन के रूप में उपयोग करने पर बल देती है। वर्ष 2022 में एससीईआरटी छत्तीसगढ़ और एलएलएफ (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन) द्वारा किए गए भाषा मानचित्रण सर्वेक्षण में यह बात निकलकर आई कि बच्चों के स्कूल की भाषा और घर की भाषा में महत्वपूर्ण अंतर है। सर्वेक्षण से यह भी पता चला कि शिक्षकों की बच्चों की भाषा की समझ भी चुनौतीपूर्ण है। यह सभी कार्यानुभव, नीतिगत बदलाव, और बस्तर जिले के भाषायी परिदृश्य की समझ बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम 'नींव' के संकल्पना का आधार बनी।

नींव बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम छह आधारभूत मान्यताओं पर आधारित है:

1. बच्चों की घर की भाषा को एक संसाधन के रूप में स्कूल में स्थान देना।
2. संतुलित साक्षरता दृष्टिकोण से काम करना।
3. संरचित शैक्षिक दृष्टिकोण (Structured Pedagogical Approach) अपनाना।
4. नियमित शिक्षक प्रशिक्षण, समीक्षा बैठकों और योजना बैठकों का आयोजन।
5. स्कूल स्तर पर शैक्षणिक सहयोग।
6. समुदाय के साथ मजबूत जुड़ाव।

इस कार्यक्रम में बच्चों की भाषा का संसाधन के रूप में कक्षा में उपयोग समकालीन द्विभाषावाद, बहुभाषावाद, और ट्रांसलिंगुअल शिक्षा के सिद्धांतों पर आधारित है। बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम में भाषा शिक्षण की संतुलित पद्धति को अपनाया गया है। इस दृष्टिकोण से काम करने के लिए यह भाषा शिक्षण के चार खंडीय रूपरेखा के अनुसार काम करती है। इस रूपरेखा के चार घटक हैं:

मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग, पठन, और लेखन। ये घटक दैनिक 90 मिनट की कक्षाओं में रणनीतिक रूप से शामिल किए जाते हैं।

कार्यक्रम में संरचित शैक्षिक दृष्टिकोण (Structured Pedagogy) के तहत शिक्षक संदर्शिका में दैनिक स्तर पर कक्षा संचालन के लिए पूरे साल की कक्षा योजना दी गई है। यह कक्षा योजना इस प्रकार बनाई गई है कि प्रत्येक छात्र कक्षावार पाठ्यक्रम लक्ष्यों को हासिल कर सके। इस योजना के तहत कक्षा संचालन के लिए कार्यक्रम में छात्रों की पाठ्यपुस्तकें, शिक्षकों के गाइड, शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षकों को निरंतर सहायता प्रदान करना शामिल है।

हर वर्ष कार्यक्रम के स्कूलों के शिक्षकों के लिए दो चरणों में प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। इसके साथ-साथ, कार्यक्रम के ब्लॉक अकादमिक समन्वयकों (BAC) और जिला अकादमिक समन्वयकों (DAC) द्वारा स्कूल स्तर पर शैक्षणिक सहयोग दिया जाता है।

मजबूत सामुदायिक जुड़ाव कार्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें कक्षा में स्थानीय भाषा, ज्ञान और संस्कृति का उपयोग शामिल है। समुदाय के साथ मिलकर स्थानीय भाषा (L1) में टीएलएम विकसित करना, कहानी उत्सवों और स्कूल स्तर पर संग्रहालयों का आयोजन करना, प्रारंभिक स्कूली वर्षों में स्थानीय ज्ञान को एकीकृत करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम का परिकल्पित कार्य मॉडल बच्चों की भाषायी पृष्ठभूमि और ज्ञान को मान्यता देता है। यह बहु-स्तरीय और बहु-मोड रणनीतियों के माध्यम से शिक्षकों को व्यवस्थित सहायता प्रदान करता है। इन रणनीतियों को लागू करना शिक्षकों को समावेशी, प्रभावी और अर्थपूर्ण शिक्षण वातावरण बनाने में सक्षम बनाता है, जो अंततः बच्चों के शैक्षणिक परिणामों को सुधारता है और विविध भाषायी पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्रों के बीच सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देता है।

1.3 कहानी कथन उत्सव: उद्देश्य, अपेक्षित परिणाम

कहानी सुनाना समाज की एक अनूठी परंपरा है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान के आदान-प्रदान और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने का कार्य करती है। यह परंपरा केवल सूचना हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सीखने वालों में सहयोग, संवाद, और गहन सोच की संस्कृति को बढ़ावा देती है। सांस्कृतिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से, कहानी सुनाना न केवल विरासत के संरक्षण और समुदाय के पोषण में सहायक है, बल्कि नैतिक और शैक्षिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए भी आवश्यक है।

कहानी सुनाने की प्रक्रिया शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण को सशक्त बनाती है। इसमें विचारों का आदान-प्रदान, चिंतनशील दृष्टिकोण, और नैतिक समझ का समावेश होता है, जो व्यक्तिगत और सामूहिक विकास के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती है। यह न केवल सामाजिक सामंजस्य को प्रोत्साहित करती है, बल्कि समाज के भीतर सांस्कृतिक विविधता को भी सुदृढ़ करती है।

बस्तर जैसे जनजातीय क्षेत्रों में कहानी सुनाना केवल एक सांस्कृतिक प्रथा नहीं है, बल्कि यह घरों की पोषित परंपरा है। यहाँ बुजुर्ग माता-पिता अपने बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं, जिससे न केवल सांस्कृतिक ज्ञान का हस्तांतरण होता है, बल्कि सुनने और बोलने के कौशलों का विकास भी होता है। यह परंपरा बस्तर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और उसे सम्मान देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम बस्तर क्षेत्र के लोक जीवन में व्याप्त कहानियों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को स्वीकार करता है। यह मानता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में जारी **'टॉप-डाउन'** दृष्टिकोण, जो ज्ञान संरचनाओं पर हावी है, उसे चुनौती देने के लिए लोक जीवन में संरक्षित ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान को शिक्षा व्यवस्था में सम्मिलित करना आवश्यक है।

इस दिशा में **कहानी कथन उत्सव** (Storytelling Festival) एक महत्वपूर्ण और प्रारंभिक कदम है। यह न केवल समुदाय के भीतर सांस्कृतिक ज्ञान को संरक्षित करता है, बल्कि बच्चों और वयस्कों को उनकी जड़ों से जोड़ने और शिक्षा प्रणाली को समावेशी व सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाने का अवसर भी प्रदान करता है।

कहानी सुनाने की यह परंपरा बस्तर की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने के साथ-साथ शिक्षा और संस्कृति के बीच के अंतराल को पाटने में सहायक सिद्ध हो सकती है। यह प्रक्रिया न केवल स्थानीय समुदायों को सशक्त करती है, बल्कि उनकी आवाज़ों को शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाकर एक न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त करती है।

कहानी-कथन के उद्देश्य (Purpose of Storytelling)

सुनने और बोलने के कौशल का विकास:
बच्चों में सुनने और बोलने के कौशल को विकसित करना, जो आगे चलकर उनके पढ़ने और लिखने की क्षमताओं में सहायक हो।

शैक्षिक संसाधन के रूप में कहानियों का उपयोग:
कहानियों को सीखने-सिखाने के एक प्रभावी शैक्षिक उपकरण के रूप में उपयोग करने की समझ विकसित करना।

कहानी सुनाने की कला को बढ़ावा देना:
बच्चों और वयस्कों में कहानी कहने की कला का विकास करना और इसे भाषा सीखने की सांस्कृतिक पद्धति के रूप में स्थापित करना।

समुदाय और स्कूल के संबंध मजबूत करना:
स्कूल और समुदाय के बीच संबंधों को सुदृढ़ करना तथा गाँव की सांस्कृतिक अस्मिता को पहचान देना।

कहानियों के विभिन्न माध्यमों का प्रयोग:
केवल मौखिक परंपरा तक सीमित न रहते हुए, लिखित, डिजिटल, पॉडकास्ट और यू-ट्यूब जैसे माध्यमों से कहानी सुनाने को प्रोत्साहित करना।

अपेक्षित परिणाम (Expected Outcome)

कहानी सुनाने के महत्व की समझ:
बच्चों और वयस्कों में स्कूल, परिवार और समुदाय के स्तर पर कहानी सुनाने के महत्व को समझने की क्षमता विकसित होगी।

कौशल विकास:
बच्चों में सुनने, बोलने, लिखने, चित्रकारी और चिंतन कौशल का विकास होगा।

शिक्षा और वास्तविक जीवन का संबंध:
शिक्षक, कक्षा के शिक्षण को स्कूल के बाहर की दुनिया से जोड़ने में सक्षम होंगे।

समुदाय और पालकों की भूमिका:
पालक और समुदाय अपने बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाते हुए शिक्षा को बढ़ावा देने में योगदान करेंगे।

कहानी कथन उत्सव के आयाम

2

बच्चों की भाषा को एक समृद्ध शैक्षणिक संसाधन के रूप में देखना और उसे वर्तमान शाला शिक्षा की प्रक्रियाओं के साथ जोड़ना बहुभाषी शिक्षा के प्रयासों के केंद्र में है। इस विमर्श में बच्चों की भाषा कोई अमूर्त संकल्पना न होकर, सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में देखने का प्रयास है। इस रूप में भाषा का स्वरूप दैनिक जीवन की वस्तुओं और सामान्य जीवन को पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने से जुड़ा हुआ है। लगभग सभी पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम बच्चों के जीवन को कक्षा से जोड़ने पर बल देते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP- 2020) इस विषय पर बच्चों के जीवन को केंद्र में लाने के लिए उनकी भाषा को कक्षा में लाने और बहुभाषी शिक्षा के प्रयासों पर जोर देती है।

बच्चों के जीवन को स्कूल से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण आयाम जिस समाज या समुदाय में बच्चे रहते हैं, वहाँ की ऐतिहासिक रूप से जारी सांस्कृतिक और कलात्मक परंपराओं को कक्षा में संसाधन के रूप में लाने से जुड़ा है। इस संदर्भ में कहानी एक विधा और कला के रूप में विश्व के सभी समाजों और समुदायों का अभिन्न अंग रही है। नींव कार्यक्रम के तहत कहानी को इसी ऐतिहासिक विधा और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में समझने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय में हम कहानी को एक विधा और शिक्षण उपकरण के रूप में संक्षेप में समझने का प्रयास करेंगे।

2.1 समाज में कहानी की भूमिका एवं कार्य

कहानी सुनाना समाज की एक ऐसी व्यवस्था है जो पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान के संचार और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने का कार्य करती है। यह प्रक्रिया सीखने वालों में आपसी सहयोग, सामूहिक कार्य संस्कृति, चर्चाओं और गहन चिंतन को बढ़ावा देती है। कहानी सुनाना सांस्कृतिक और शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विरासत के संरक्षण, समुदाय के पोषण और ज्ञान व मूल्यों की स्थापना में सहायक है।

इतिहास में अधिकांशत: कहानी मौखिक परंपरा का हिस्सा रही है और सामान्यत: अनौपचारिक रूप में दैनिक जीवन के मनोरंजन के क्षणों से जुड़ी रही है। यह मौखिक परंपराएं पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान, नैतिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहारों को संरक्षित करने में सहायक रही हैं। यह मौखिकता का प्रभाव ही है कि कई संस्कृतियों में ऐतिहासिक घटनाओं, पारंपरिक ज्ञान, रीति-रिवाजों और नैतिकता की शिक्षा को संरक्षित करने के लिए कहानी कथन को मुख्य साधन के रूप में अपनाया गया है।

कहानी कथन के कार्य:

संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण

कहानियाँ किसी भी समाज की संस्कृति और परंपराओं को सुरक्षित रखने और अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण माध्यम होती हैं। वे केवल मनोरंजन का जरिया नहीं होतीं, बल्कि विचारों और मूल्यों को संचारित करने का भी काम करती हैं। इनके माध्यम से समुदाय अपनी मान्यताओं और नैतिक दृष्टिकोण को साझा करता है।

कहानियाँ प्रतीकों और संकेतों के जरिये सांस्कृतिक धारणाओं को संरक्षित करती हैं। इनमें मौजूद संकेत (signs) और प्रतीक (symbols) सिर्फ वर्णनात्मक नहीं होते, बल्कि वे समाज की सांस्कृतिक पहचान को भी दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, आदिवासी समुदायों की लोककथाएँ उनके पारंपरिक ज्ञान, पर्यावरणीय समझ और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में मदद करती हैं। ये कहानियाँ समुदाय की सामूहिक स्मृति का हिस्सा बनकर उसकी पहचान को मजबूत करती हैं।

इसके अलावा, कहानियों की संरचना समाज की विचारधारा को भी दर्शाती है। किसी कहानी का कथानक (narrative structure) सिर्फ घटनाओं को जोड़ने का जरिया नहीं होता, बल्कि इसके माध्यम से समाज की शक्ति संरचनाएँ और प्रभावी विचारधाराएँ भी दोबारा स्थापित होती हैं। समुदाय अपनी कहानियों के जरिये अपनी सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों को दोहराते हैं और नए संदर्भों में उन्हें फिर से परिभाषित करते हैं।

मौखिक इतिहास एवं किंवदंतियाँ

मौखिक परंपराएँ इतिहास को सहेजने और अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण तरीका हैं, खासकर स्थानीय और आदिवासी समुदायों के लिए। कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं होतीं, बल्कि वे सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक मूल्यों और ऐतिहासिक घटनाओं को पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित करने का जरिया भी होती हैं।

मौखिक परंपराएँ समाज की संस्कृति और इतिहास को संरक्षित करने में मदद करती हैं। जिन समुदायों के पास लिखित अभिलेख नहीं होते, उनके लिए मौखिक इतिहास एक वैकल्पिक दस्तावेज़ के रूप में कार्य करता है, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक स्मृतियाँ बनी रहती हैं। इस प्रक्रिया में कहानी कहने वाले लोग इतिहास के संरक्षक की भूमिका निभाते हैं। वे समुदाय के अनुभवों, संघर्षों और ज्ञान को कहानियों के रूप में सहेजते और आगे बढ़ाते हैं।

समय के साथ मौखिक इतिहास और किंवदंतियाँ बदलती रहती हैं, जिससे समुदाय अपने अतीत को वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों के अनुसार फिर से परिभाषित कर सकते हैं। यह परंपरा केवल पुरानी घटनाओं को याद रखने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और प्रतिरोध का एक मजबूत माध्यम भी बन जाती है।

इस प्रकार, मौखिक इतिहास और किंवदंतियाँ केवल बीते समय की जानकारी को संरक्षित नहीं करतीं, बल्कि वे समुदाय की यादों, मूल्यों और संघर्षों को जीवंत रखती हैं, जिससे उनकी सांस्कृतिक धरोहर को मजबूती और निरंतरता मिलती है।

भाषा विकास में योगदान

कहानियाँ बच्चों के भाषा विकास में अहम भूमिका निभाती हैं, क्योंकि वे शब्दावली, वाक्य संरचना और अभिव्यक्ति कौशल को समृद्ध करने का प्रभावी माध्यम होती हैं। कई शिक्षाविदों का मानना है कि बचपन में कहानियों के निरंतर संपर्क से बच्चों

की भाषा दक्षता में सुधार होता है।

कहानियों के जरिए बच्चे नए शब्दों का अर्थ संदर्भ के आधार पर समझते और सीखते हैं। वे केवल शब्दों को याद नहीं रखते, बल्कि उनके प्रयोग और भावनात्मक गहराई को भी आत्मसात करते हैं। इसके अलावा, कहानियाँ भाषा की जटिल संरचनाओं से परिचित कराती हैं। जब बच्चे कहानियाँ ध्यान से सुनते या पढ़ते हैं, तो वे वाक्य विन्यास, व्याकरणिक नियम और अनुच्छेद निर्माण की बारीकियाँ स्वाभाविक रूप से सीखते हैं।

अभिव्यक्ति कौशल के संदर्भ में, कहानियाँ बच्चों को अपने विचारों को तार्किक और क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने में सहायता करती हैं। कहानी के पात्रों के संवाद, विवरणात्मक भाषा और घटनाओं की क्रमबद्ध प्रस्तुति बच्चों की संप्रेषण क्षमता को बेहतर बनाती है। जब वे कहानियों को दोहराते या अपने शब्दों में पुनः प्रस्तुत करते हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अधिक प्रभावी रूप से संवाद कर पाते हैं। इस प्रकार, कहानियाँ न केवल भाषा सीखने को सहज बनाती हैं, बल्कि बच्चों के संपूर्ण भाषायी विकास में सहायक होती हैं।

गहन चिंतन और आलोचनात्मक सोच में कहानियों की भूमिका

कहानियाँ केवल मनोरंजन या ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं होतीं, बल्कि वे श्रोताओं और पाठकों में गहन चिंतन और आलोचनात्मक सोच को विकसित करने में भी मदद करती हैं। जब कोई व्यक्ति कहानी सुनता या पढ़ता है, तो वह स्वाभाविक रूप से पात्रों के निर्णय, उनके व्यवहार, कथानक के मोड़ और घटनाओं के संभावित परिणामों पर विचार करता है। यह प्रक्रिया उसे विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है, जिससे उसकी तार्किक और आलोचनात्मक क्षमता का विकास होता है।

कहानियों की संरचना भी आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, किसी पात्र को नैतिक दुविधा का सामना करते हुए दिखाने पर पाठक या श्रोता विभिन्न संभावनाओं पर विचार करने को प्रेरित होते हैं। वे स्वयं से प्रश्न करते हैं- क्या यह निर्णय उचित था? क्या अन्य समाधान संभव थे? इस प्रकार, कहानियाँ केवल निष्क्रिय श्रवण प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे सक्रिय विश्लेषण और आत्ममंथन को भी प्रेरित करती हैं।

इसके अलावा, कहानियाँ कल्पना और तर्कशीलता को एक साथ जोड़कर श्रोताओं को वैकल्पिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं। इससे वे

किसी भी स्थिति को एकांगी दृष्टि से देखने के बजाय बहु-आयामी तरीके से विश्लेषण कर पाते हैं। यह प्रक्रियाएँ उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल (higher-order cognitive skills) के विकास में सहायक होता है, जिसमें मूल्यांकन (evaluation) और सृजनात्मक चिंतन (creative thinking) शामिल है।

अत:, कहानियाँ न केवल श्रोताओं और पाठकों में आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि उन्हें अधिक विवेकशील, संवेदनशील और तार्किक विचारक बनने में भी सहायता करती हैं।

सामाजिक समरसता और एकता का निर्माण

सामाजिक समरसता और एकता के निर्माण में कहानियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं होतीं, बल्कि वे सामुदायिक पहचान को सुदृढ़ करने और सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने का कार्य भी करती हैं। जब समुदाय अपने साझा अनुभवों, परंपराओं और मूल्यों को कहानियों के माध्यम से व्यक्त करता है, तो यह सामूहिक स्मृति (collective memory) को सहेजने और उसे अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने में सहायक होती है।

कहानियाँ समुदाय में पारस्परिक विश्वास और एकजुटता को बढ़ावा देती हैं। वे जातीय, भाषायी या सांस्कृतिक विविधता के बावजूद सामूहिकता की भावना विकसित करती हैं। उदाहरण के लिए, आदिवासी समाजों में मौखिक परंपराएँ न केवल सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करती हैं, बल्कि सामूहिक सहयोग और सामाजिक न्याय के मूल्यों को भी पोषित करती हैं। इस प्रकार, कहानियाँ सामाजिक समरसता का माध्यम बनती हैं और विभिन्न समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का विकास

कहानी कथन बच्चों की कल्पनाशक्ति को उत्तेजित करने का एक प्रभावी माध्यम है। जब वे किसी कहानी को सुनते हैं, तो वे उसमें वर्णित पात्रों, स्थलों और घटनाओं की अपनी कल्पना में पुनर्रचना करते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों के मानसिक विकास को बढ़ावा देती है और उनके रचनात्मक सोच को मजबूत करती है। उदाहरण के लिए, जब एक बच्चा किसी परीकथा को सुनता है, तो वह अपने अनुभव और कल्पना के आधार पर उसमें निहित दुनिया को चित्रित करता है। यह न केवल उनकी कल्पनाशीलता को विकसित करता है बल्कि उन्हें अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की क्षमता भी प्रदान करता है। इसके अलावा, कहानियाँ बच्चों को नए परिप्रेक्ष्य अपनाने, वैकल्पिक समाधान खोजने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता विकसित करने में सहायक होती हैं। इस प्रकार, कहानी कथन बच्चों की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रेरित करता है, जो उनके संज्ञानात्मक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पढ़ने, लिखने और बोलने के कौशलों का विकास

भाषा कौशल का विकास कहानी कथन के प्रमुख लाभों में से एक है। जब बच्चे कहानियाँ सुनते हैं, तो वे नए शब्दों, वाक्य संरचनाओं और भाषायी अभिव्यक्तियों से परिचित होते हैं, जिससे उनकी शब्दावली और भाषा की समझ विकसित होती है। उदाहरणस्वरूप, यदि कोई बच्चा नियमित रूप से कहानियाँ सुनता है, तो वह भाषा के ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक नियमों को अनजाने में आत्मसात कर लेता है, जिससे उसकी पठन एवं लेखन क्षमता मजबूत होती है। इसके अतिरिक्त, कहानियों में मौजूद संवाद और घटनाएँ बच्चों को बोलने की कला सीखने में भी सहायता करती हैं। जब वे कहानियों को दूसरों को सुनाने या नाटकीय प्रस्तुति देने का प्रयास करते हैं, तो उनकी संप्रेषण क्षमता में सुधार होता है। इसलिए, कहानी कथन केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह भाषा सीखने और व्यक्तित्व विकास का एक सशक्त उपकरण भी है, जो बच्चों को एक सक्षम संप्रेषक बनने में सहायता करता है।

आलोचनात्मक चिंतन को मजबूत करना

कहानी कथन केवल बच्चों को कल्पनाशीलता और भाषा कौशल प्रदान नहीं करता, बल्कि यह उनके आलोचनात्मक चिंतन को भी विकसित करता है। कहानियों में विभिन्न पात्रों के संघर्ष, नैतिक दुविधाएँ, और सामाजिक मुद्दे होते हैं, जो बच्चों को जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ते हैं। जब बच्चे किसी कहानी के नायक की परिस्थितियों का मूल्यांकन करते हैं, तो वे तर्कसंगत सोच, कारण-परिणाम की समझ और नैतिक विश्लेषण की क्षमता विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र या जातक कथाओं जैसी कहानियाँ बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उनके निर्णय लेने की क्षमता को भी मजबूत करती हैं। कहानियाँ बच्चों को यह सिखाती हैं कि कठिन परिस्थितियों में कैसे सोचना चाहिए और निर्णय लेने से पहले विभिन्न संभावनाओं पर विचार करना चाहिए। इस प्रकार, कहानी कथन बच्चों को समाज की जटिलताओं को समझने और अपनी सोच को अधिक गहराई से विकसित करने का अवसर प्रदान करता है।

2.3 लोक संस्कृति की कहानियों को शाला शिक्षा में लाना

जब भी कोई गाँव का बुज़ुर्ग किसी बच्चे को कहानी सुनाने बैठता है, तो वह सिर्फ़ एक कथा नहीं सुनाता, बल्कि उसकी आवाज़, हाव-भाव, और कहानी कहने का ढंग एक पूरे सांस्कृतिक अनुभव को संप्रेषित करता है। इन कहानियों के पात्र केवल शब्दों में सीमित नहीं होते, बल्कि वे कहानी कहने वाले व्यक्ति की ध्वनि, शरीर-भाषा, और संदर्भित स्थान से भी जुड़ते हैं। किंतु जब इन्हीं लोक कहानियों को स्कूली शिक्षा में शामिल करने की बात आती है, तो उनकी मौलिकता को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। वे न केवल लिखित शब्दों में बदल जाती हैं, बल्कि उनके स्वरूप, प्रस्तुतीकरण, शिक्षण विधियों, और संदर्भों में भी कई स्तरों पर बदलाव करना पड़ता है। आइए, इन विभिन्न परिवर्तनों को विस्तार से समझते हैं।

प्रस्तुतीकरण और पाठ संरचना में परिवर्तन

गाँव के किसी घर में बैठकर जब कोई दादी नानी कहानी सुनाती हैं, तो कहानी में उनके अनुभवों, स्थान, और संदर्भों का अनूठा मिश्रण होता है। उनकी कहानियाँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि कौन उन्हें सुन रहा है,

माहौल क्या है, और किस संदर्भ में कथा कही जा रही है। इस तरह, मौखिक परंपराएँ संदर्भ-विशिष्ट होती हैं और वे अपने स्थानीय वातावरण में ही पूरी तरह अर्थ ग्रहण करती हैं।

लेकिन स्कूली व्यवस्था में कहानियों को मानकीकृत भाषा और संरचित पाठ्यसामग्री में ढालना आवश्यक हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि वे एक निश्चित पाठ्यक्रम के अनुरूप बनाई जाती हैं, जिससे उनकी स्वाभाविकता कहीं खो जाती है। स्कूल की पाठ्यपुस्तकें अक्सर मौखिक कहानियों की लयात्मकता और प्राकृतिक प्रवाह को सीमित कर देती हैं, जिससे वे संरचना में तो समृद्ध हो सकती हैं, लेकिन उनकी सहजता और बहुपरतीयता समाप्त हो जाती है।

अनुकूलन और रूपांतरण की प्रक्रिया

लोककथाएँ एक प्रवाहमान परंपरा का हिस्सा होती हैं। जिस तरह से वे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाती हैं, उनमें धीरे-धीरे बदलाव होते रहते हैं। एक ही कहानी अलग-अलग समुदायों में अलग-अलग रूपों में प्रचलित हो सकती है। यह उनकी मौखिक परंपरा की सहज विशेषता है। लेकिन स्कूली पाठ्यक्रम में जब इन्हें शामिल किया जाता है, तो उन्हें एक स्थायी रूप दिया जाता है- ऐसा रूप जिसमें परिवर्तन की गुंजाइश कम हो जाती है ।

इस प्रक्रिया में एक और बदलाव यह आता है कि मौखिक कहानियों के संदर्भ, पात्र और घटनाएँ जो स्थानीय समाज और सांस्कृतिक वास्तविकताओं से गहरे जुड़े होते हैं, उन्हें व्यापक राष्ट्रीय या वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पुर्नर्निर्मित किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक विशिष्ट आदिवासी समुदाय की कहानी, जो उनके जीवन और संघर्ष को दर्शाती है, जब स्कूली पाठ्यक्रम में आती है, तो उसे इस तरह ढाल दिया जाता है कि वह सभी छात्रों के लिए प्रासंगिक लगे। इस प्रक्रिया में कई बार कहानी के मूल सन्दर्भ खो जाते हैं।

शिक्षण विधियों में बदलाव

गाँवों में कहानियाँ सुनाना सहभागिता पर आधारित होती है। बच्चे केवल श्रोता नहीं होते, वे सवाल पूछते हैं, अपने अनुभव जोड़ते हैं, और कभी-कभी तो कहानी के पात्रों पर अपनी राय भी देते हैं। मौखिक परंपराएँ इस तरह से सहभागितापूर्ण शिक्षण (participatory learning) को प्रोत्साहित करती हैं।

इसके विपरीत, स्कूली शिक्षा के केंद्र में कई बार

शिक्षक होते है जो कहानी को पुस्तक से पढ़ाते है. स्कूल में जिस तरीके से कहानियों को पढ़ाया जाता है वह कई बार इनकी संवादपरकता को समाप्त कर देती है और उसे एक निष्क्रिय पाठ्य-सामग्री में बदल देती है। जबकि मौखिक परंपरा में कहानियाँ छात्रों को संवाद में शामिल होने का अवसर देती हैं। इसके साथ साथ औपचारिक शिक्षा से जुड़े हुए कई अन्य आयाम जैसे- अनुशासन, मानकीकरण इत्यादि सीखने की प्रक्रिया प्रमुख हो जाती है और कहानियाँ गौण हो जाती है।

संप्रेषण माध्यम और टेक्स्ट का स्थायित्व

मौखिक परंपराओं में कहानियाँ केवल याद करने और कहने की प्रक्रिया तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि वे हर बार दोहराने पर बदलती रहती हैं। इसका कारण यह है कि हर कथावाचक अपनी शैली और अनुभवों के अनुसार कहानी में कुछ नया जोड़ता है। इससे एक ही कहानी अलग-अलग अवसरों पर नए अर्थ ग्रहण कर सकती है। लेकिन जब कहानियों को स्कूली शिक्षा में लिखित रूप में संरक्षित किया जाता है, तो वे स्थिर और अपरिवर्तनीय हो जाती हैं ।

इसका प्रभाव यह होता है कि कहानियों की पुनर्रचना और सामूहिक संपादन की संभावना सीमित हो जाती है। जो कहानियाँ पहले प्रत्येक पीढ़ी के साथ नए सन्दर्भों में ढलती थीं, वे अब एक निश्चित रूप में पाठ्यपुस्तकों में संकलित हो जाती हैं, जिससे उनका पुनर्सृजन कठिन हो जाता है।

स्थानीयता बनाम मानकीकरण

लोककथाएँ प्राय: स्थानीय समाज और क्षेत्रीय विशेषताओं से जुड़ी होती हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान की लोककथाओं में रेगिस्तानी जीवन की कठिनाइयों और वीरता की कहानियाँ अधिक होती हैं, जबकि पूर्वोत्तर भारत की कहानियों में प्रकृति, जल और पर्यावरण का विशेष महत्त्व होता है।

जब इन्हीं कहानियों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है, तो उन्हें राष्ट्रीय या वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इस प्रक्रिया में अक्सर उनकी स्थानीय विशिष्टताएँ और सांस्कृतिक संदर्भ खो जाते हैं। इस वजह से बच्चे उन कहानियों से खुद को कम जुड़ा हुआ महसूस कर सकते हैं, जो उनके अपने स्थानीय परिवेश से नहीं निकली हैं।

नींव बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम ज्ञान के टॉप बॉटम एप्रोच के स्थान पर स्थानीय ज्ञान और सांस्कृतिक परम्पराओं को शामिल करने के लिए स्थानीय कहानियों को सीखने-सिखाने में शामिल करने के विचार पर बल देता है। इसके लिए यह कार्यक्रम स्थानीय कहानियों और लोककथाओं को स्कूली शिक्षा में शामिल करने के लिए कहानी कथन उत्सव का आयोजन करता है। इस पाठ में हमने कहानी के शिक्षा शास्त्रीय महत्त्व पर विस्तार से विचार किया। साथ ही साथ यह भी देखा कि स्थानीय कहानी और मौखिक परम्परा में शामिल कहानियों को कक्षा में लाने की प्रक्रिया में काफी कुछ बदल जाने का ख़तरा है। एक कोशिश यह है कि शिक्षक और स्कूल इन कहानियों को पढ़ाने के तरीकों में मौखिक परंपराओं के तत्वों को बनाए रखें, ताकि वे केवल शब्दों तक सीमित न रह जाएँ, बल्कि बच्चों के लिए संवाद और अनुभव का माध्यम बनें। यह भी कोशिश की जा सकती है कि शिक्षक कहानी कहने की पारंपरिक विधियों को अपनाएँ, जिसमें प्रदर्शन (performance), संवाद (dialogue), और बच्चों की भागीदारी (participation) को बढ़ावा दिया जाए। जब लोककथाएँ केवल पढ़ने और याद करने की चीज़ न बनकर, बच्चों की कल्पनाओं और संवादों का हिस्सा बनेंगी, तभी वे वास्तव में शिक्षा का एक जीवंत अंग बन पाएँगी। बस्तर बहुभाषी शिक्षा कहानी कथन महोत्सव इन सभी संभावनाओं को तलाशने की कोशिश करता है।

3 कहानी कथन उत्सव: योजना, तैयारी और क्रियान्वयन

नींव बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम की संकल्पना में मजबूत समुदाय-शाला संबंध को केंद्र में रखते हुए, विशेष रूप से कहानी कथन उत्सव के आयोजन की विस्तृत योजना बनाई गई थी। विगत तीन वर्षों से कार्यक्रम के स्कूलों में नियमित रूप से कहानी कथन उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस परिकल्पना को जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने के लिए लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन, विशेष रूप से बस्तर टीम, निरंतर प्रयासरत रही है। इस सफलता के पीछे उनकी सतत प्रतिबद्धता और विभिन्न चरणों एवं स्तरों पर किया गया समर्पित कार्य शामिल है।

दस्तावेज के पिछले दो अध्यायों में हमने कार्यक्रम के बारे में और कहानी कथन उत्सव से जुड़े हुए कुछ सैद्धांतिक पक्षों को समझा है। इस अध्याय में हम बस्तर के स्कूलों में आयोजित कहानी कथन उत्सव में शामिल सभी हितधारकों की भूमिका, आयोजन की तैयारी हेतु बनाई गई योजनाओं तथा उसके क्रियान्वयन की प्रक्रिया को समझेंगे।

3.1 नींव कार्यक्रम में कहानी कथन उत्सव से जुड़े सभी हितधारकों की भूमिका

स्कूल स्तर पर कहानी कथन उत्सव के आयोजन के लिए इससे जुड़े सभी हितधारकों के बीच एक सुनिश्चित योजना के तहत कार्य करना आवश्यक होता है। इस उत्सव में स्कूल, शिक्षक, बच्चे, संभावित कहानी वाचक, समुदाय और नींव कार्यक्रम के कार्यकर्ता शामिल होते हैं। इन सभी की अलग-अलग भूमिकाएँ होती हैं, और उनके सामूहिक प्रयासों से ही उत्सव को सफल बनाया जाता है।

बस्तर के स्कूल और शाला शिक्षा तंत्र

बस्तर के स्कूल और शाला शिक्षा तंत्र इस आयोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। कार्यक्रम में शामिल सभी स्कूलों में यह उत्सव आयोजित किया जाता है, और हर स्कूल की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रधानाध्यापक, शिक्षक, संकुल समन्वयक और कार्यक्रम के कार्यकर्ता मिलकर योजना बनाते हैं। उत्सव के आयोजन से पहले जिला और ब्लॉक स्तर पर शिक्षा अधिकारियों से अनुमति लेने की प्रक्रिया पूरी की जाती है। साथ ही, उत्सव की परिकल्पना को सुदृढ़ करने और शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए DIET का सहयोग लिया जाता है। इस तरह, बस्तर जिले के सभी स्कूल और शिक्षा तंत्र विभिन्न स्तरों पर इस आयोजन के लिए अपना सहयोग देते हैं।

तालिका 3.1

कहानी कथन उत्सव में सभी हितधारकों की भागीदारी

वर्ष	स्कूलों की संख्या	नोडल केंद्र की संख्या	प्रतिभागी बच्चों की संख्या	प्रतिभागी कहानी वाचकों की संख्या	प्रतिभागी समुदाय सदस्यों की संख्या	प्रतिभागी शिक्षकों की संख्या	संगृहीत कहानियों की संख्या
2022-23	200	48	2000	200	1336	267	223
2023-24	702	142	7020	702	4095	781	731
2024-25*	409	94	4090	409	2475	459	429
	1311	**284**	**13110**	**1311**	**7906**	**1507**	**1383**

* दिए गए आंकड़े 15 फरवरी 2025 तक के है। मार्च 2025 तक 400 स्कूलों में यह आयोजन होना शेष है।

बस्तर के प्राथमिक शाला के शिक्षक

शिक्षकों की भूमिका इस उत्सव के आयोजन में सबसे महत्वपूर्ण होती है। वे न केवल स्कूल स्तर पर उत्सव का संचालन करते हैं, बल्कि बच्चों के चयन, कहानी सुनाने की व्यवस्था और कहानी के दस्तावेजीकरण की जिम्मेदारी भी निभाते हैं। इसके अलावा, उत्सव की तैयारी के लिए आयोजित होने वाली कार्यशालाओं में भी उनकी सक्रिय भागीदारी होती है।

बस्तर जिले के गाँव के बच्चे

बच्चे इस उत्सव का अभिन्न हिस्सा होते हैं और दो तरह से इसमें भाग लेते हैं। पहला, वे कहानी वाचक द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों को ध्यान से सुनते हैं। दूसरा, वे अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए कहानी के चित्र बनाते या उसे लिखते हैं। पहली और दूसरी कक्षा के बच्चे आमतौर पर कहानी से जुड़े चित्र बनाते हैं, जबकि तीसरी से पाँचवीं कक्षा के बच्चे कहानी को शब्दों में लिखते हैं।

ग्रामीण बस्तर के कहानी वाचक

स्थानीय कहानीकार इस उत्सव की मुख्य कड़ी होते हैं, क्योंकि कहानी सुनाने की जिम्मेदारी उन्हीं की होती है। उनकी उपस्थिति और सहभागिता से यह सुनिश्चित होता है कि बच्चे अपनी स्थानीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़ाव महसूस करें।

ग्रामीण बस्तर समुदाय

समुदाय की भूमिका भी इस आयोजन में बेहद अहम होती है। समुदाय न केवल स्थानीय कहानियों की प्रासंगिकता को बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि उत्सव की सफलता सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय भागीदारी भी करता है। इसके अतिरिक्त, कई बार जन प्रतिनिधि और समुदाय के सदस्य इस आयोजन के लिए आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते हैं।

नींव कार्यक्रम के कार्यकर्ता

पूरे आयोजन के केंद्र में नींव कार्यक्रम के कार्यकर्ता होते हैं, जो न केवल इस संकल्पना को वास्तविकता में बदलने का कार्य करते हैं, बल्कि कई बार अन्य हितधारकों की भूमिकाओं को भी निभाते हैं। उनकी निरंतर मेहनत और समर्पण के कारण ही बस्तर जिले के स्कूलों में यह आयोजन संभव हो पाया है।

3.2. कहानी-कथन उत्सव की तैयारी : पहला चरण

बस्तर जिले में कहानी कथन उत्सव को जमीनी स्तर पर लागू करने के लिए कार्यक्रम टीम ने एक सुनिश्चित योजना के तहत कार्य प्रारंभ किया। इस योजना के मुख्य घटक थे- कहानी कथन उत्सव के लिए नोडल स्कूल और शिक्षकों का चयन, उनका प्रशिक्षण, पूर्व-तैयारी हेतु सभी संबंधित हितधारकों से प्रारंभिक संवाद, तथा संसाधनों के साथ प्रभावी कार्य करने की आवश्यक व्यवस्थाएँ।

नोडल स्कूल का चयन

कहानी कथन उत्सव की तैयारी की शुरुआत में कार्यक्रम के अंतर्गत सभी स्कूलों को पाँच-पाँच स्कूलों के क्लस्टर में विभाजित किया गया। इन पाँच स्कूलों में से एक को नोडल स्कूल चुना गया, जबकि शेष चार स्कूलों को इस नोडल स्कूल से जोड़ा गया। चूँकि नोडल स्कूल के शिक्षकों को इस आयोजन की संपूर्ण तैयारी की जिम्मेदारी निभानी होती है, अतः नोडल स्कूल के चयन से पूर्व वहाँ पदस्थ शिक्षकों के साथ विस्तृत चर्चा की जाती है। इसके अतिरिक्त, संभावित नोडल स्कूल की भौगोलिक स्थिति, अन्य चार स्कूलों से दूरी, स्कूल के बुनियादी ढांचे आदि को भी ध्यान में रखा जाता है।

शिक्षकों का नामांकन एवं कार्यशाला

नोडल स्कूलों के चयन के पश्चात प्रत्येक नोडल स्कूल से एक-एक नोडल शिक्षक का चयन किया जाता है। इसके उपरांत सभी नोडल शिक्षकों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इन दोनों प्रक्रियाओं के लिए विकासखंड शिक्षा अधिकारी के कार्यालय से आदेश

पत्र निर्गत किए जाते हैं। आदेश पत्र जारी होने के पश्चात कार्यशाला में कहानी कथन आयोजन से जुड़े सभी पहलुओं पर शिक्षकों के साथ विस्तृत चर्चा की जाती है। इसमें प्रतिभागी बच्चों के चयन, कहानी वाचक के चयन, स्कूल में तैयारी की विभिन्न प्रक्रियाओं एवं संसाधन जुटाने से लेकर अन्य चार स्कूलों के शिक्षकों के साथ समन्वय तकख़्की रूपरेखा तैयार की जाती है।

कार्यक्रम के पहले वर्ष (2022-23) में नोडल शिक्षकों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। इस पहले वर्ष के अनुभवों से सीख लेते हुए, आगामी दो अकादमिक वर्षों (2023-24 एवं 2024-25) में कार्यशाला का आयोजन एक-एक दिन के लिए किया गया।

उत्सव की तिथि निर्धारण एवं आयोजन

तैयारी कार्यशाला के उपरांत, प्रत्येक नोडल स्कूल में उत्सव की तैयारी हेतु तिथि निर्धारित की जाती है। चूँकि इस आयोजन में कई स्तरों पर कार्य करना होता है और कार्यक्रम के अधिकांश सदस्य इसमें सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, अत: एक ही समय में एक से अधिक कहानी कथन उत्सवों का आयोजन किया जाता है।

आयोजन प्राय: शनिवार को रखा जाता है ताकि बच्चों और स्कूल की अकादमिक गतिविधियों पर न्यूनतम प्रभाव पड़े। हालांकि उत्सव की तिथि नोडल स्कूल के प्रधानाध्यापक एवं एक समन्वयक शिक्षक के साथ परामर्श कर तय की जाती है। इसके उपरांत समस्त तैयारियाँ नोडल स्कूल के सहयोग से संपन्न की जाती हैं।

3.3. कहानी-कथन उत्सव की तैयारी : दूसरा चरण

इस चरण में कार्यक्रम के कार्यकर्ता नोडल शिक्षक से मिलकर कहानी कथन उत्सव की पूरी योजना को नोडल स्कूल से जुड़े सभी स्कूलों के साथ मिलकर पूरा करते हैं। इसके लिए सबसे पहले नोडल शिक्षक नोडल स्कूल से जुड़े हुए सभी शालाओं में जाकर प्रधानाध्यापक से मिलते हैं और उत्सव के लिए एक शिक्षक को शाला से मनोनीत करते हैं। इन मनोनीत शिक्षकों की जिम्मेदारी उस स्कूल के बच्चों की भागीदारी को कहानी कथन उत्सव में सुनिश्चित करना होता है। इसके अलावा, इन्हीं शिक्षकों की जिम्मेदारी उस गाँव से एक कहानी वाचक का चयन करने और उत्सव के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाने की भी होती है।

स्कूल में बच्चों का चयन

सबसे पहले उत्सव में भाग लेने वाले बच्चों का चयन किया जाता है। प्रत्येक स्कूल से 10 बच्चों को शामिल किया जाता है, जिसमें प्रत्येक कक्षा से 2 बच्चे, एक बालक और एक बालिका का चयन किया जाता है। इस प्रकार, कुल मिलाकर 50 बच्चों का समूह बनता है।

चयनित बच्चों से यह अपेक्षा रहती है कि वे कहानी वाचक द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों को सुनकर उनका चित्र बनाएँगे और दस्तावेजीकरण करेंगे। पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों की जिम्मेदारी केवल चित्र बनाने की होती है, जबकि तीसरी से पाँचवीं कक्षा के बच्चों की जिम्मेदारी चित्र बनाने के साथ-साथ कहानी वाचक द्वारा सुनाई गई कहानी का दस्तावेजीकरण करने की होती है। प्रतिभागी बच्चों के चयन के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी बच्चे अपनी कक्षा के अनुसार चित्र बनाने और एक स्तर तक लिखने की दक्षता रखते हों। बच्चों के चयन के बाद, उनसे कहानी कथन उत्सव के बारे में चर्चा की जाती है और प्रतिभागी के रूप में उनकी भूमिकाओं को स्पष्ट किया जाता है।

गाँव में कहानी वाचक तलाशना

इसके पश्चात उत्सव में शामिल होने वाले सभी स्कूल, जिस गाँव में स्थित हैं, वहाँ से एक-एक कहानी वाचक को ढूँढ़ने का कार्य किया जाता है। इसके लिए नोडल शिक्षक, अपने साथ उस गाँव के स्कूल के शिक्षक को लेकर गाँव में जाते हैं। कहानी वाचक ढूँढ़ने के लिए वे पंचायत प्रतिनिधियों से भी मदद ले सकते हैं और उनके सहयोग से गाँव के एक

खुले स्थान पर बैठक आयोजित करते हैं, जिसमें वे गाँव के बुजुर्गों को आमंत्रित करते हैं। जैसे ही सब लोग एकत्रित होते हैं, शिक्षक आत्मीयता के साथ अपना परिचय देते हैं और बैठक का उद्देश्य बताते हैं कि वे बच्चों के लिए लोककथाओं और पारंपरिक कहानियों को संजोने और साझा करने हेतु आमंत्रित करने आए हैं।

इसके बाद चर्चा को आगे बढ़ाते हुए शिक्षक पूछते हैं, ''क्या आप स्कूल में आकर बच्चों को ये कहानियाँ सुनाना चाहेंगे?'' शुरुआती वर्षों में लोगों की सीधी भागीदारी थोड़ी कठिन होती है, लेकिन आमतौर पर समुदाय के लोग उत्सुकता और खुशी के साथ कहानी सुनाने के लिए सहमति दे देते हैं।

बैठक के अंत में सहमति जताने वाले लोगों से संपर्क की जानकारी ली जाती है ताकि भविष्य में उनसे आसानी से जुड़ा जा सके। इसके बाद शिक्षक उनसे निरंतर संवाद बनाए रखते हैं। बातचीत के अगले चरण में गाँव के स्कूल के शिक्षक चयनित बुजुर्गों से उन कहानियों को पहले सुनते हैं, जिन्हें वे उत्सव के दौरान सुनाना चाहते हैं। शिक्षक को अपने सहयोगी शिक्षक और संकुल समन्वयक के साथ यह तय करना होता है कि उपरोक्त कहानी बच्चों को सुनाने योग्य है या नहीं। कुछ कहानियों पर चर्चा करने के बाद, कुछ कहानियों को निश्चित कर लिया जाता है और उन्हीं कहानियों पर कहानी वाचक को अभ्यास करने के लिए कहा जाता है।

अन्य संसाधनों की तैयारी

इन सभी तैयारियों के साथ-साथ, नोडल स्कूल में उत्सव के आयोजन के लिए कुछ सहयोग राशि जुटानी पड़ती है। उत्सव में लगभग 50-100 बच्चे शामिल होते हैं, जिनमें से 40 बच्चे अन्य स्कूलों से आते हैं। इन बच्चों के लिए जलपान और भोजन की व्यवस्था करनी होती है। बच्चों के भोजन की व्यवस्था के लिए सभी स्कूल के मधयाह्न भोजन से 10- 10 बच्चों के हिस्से को नोडल स्कूल में शामिल कर लिया जाता है जिससे बच्चों के भोजन का इंतजाम हो जाता है।

इसके अलावा, गाँव से बड़ी संख्या में लोग भी इस उत्सव में भाग लेते हैं, जिनके लिए जलपान की व्यवस्था आवश्यक होती है। इसके अलावे बैठक व्यवस्था के लिए पंडाल और दरी, तथा कहानी सुनाने के लिए माइक और साउंड सिस्टम की भी आवश्यकता होती है। इसके साथ-साथ, आयोजन के दौरान स्कूल स्तर पर कुछ खर्च जनप्रतिनिधियों के स्वागत, पंडाल सजावट, चार्ट बोर्ड, कॉपी-पेन/पेंसिल

आदि के लिए भी होता है। कुछ राशि कार्यक्रम से मिलती है जबकि शेष राशि का इतंजाम सामूहिक सहयोग से किया जाता है। इसके लिए समुदाय, पंचायत और शिक्षकों के व्यक्तिगत सहयोग से आवश्यक धनराशि जुटाई जाती है।

इसके अलावा, जो बच्चे अन्य गाँवों से आते हैं, उनके आवागमन की व्यवस्था भी देखनी होती है। बस्तर के कई गाँवों से नोडल स्कूल पहुँचना कठिन होता है, विशेष रूप से पहली और दूसरी कक्षा के छोटे बच्चों के लिए। इसलिए, कई बार इन बच्चों के आवागमन के लिए ट्रैक्टर की व्यवस्था भी सामुदायिक सहयोग से करनी होती है।

यह सारी तैयारियाँ कहानी कथन उत्सव की निर्धारित तिथि से पहले पूरी कर ली जाती हैं। नियत तिथि से दो दिन पूर्व प्रतिभागी बच्चों से पुनः संवाद किया जाता है और उन्हें उनकी भूमिकाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है। इसी प्रकार, कहानी वाचक से मिलकर तय की गई कहानी सुनाने की प्रक्रिया पर भी चर्चा की जाती है। उत्सव के लिए जिन पंचायत प्रतिनिधियों या जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाना होता है, उनके निमंत्रण की प्रक्रिया एक दिन पूर्व पूरी कर ली जाती है। उसी दिन, नोडल स्कूल में बैठक व्यवस्था, दरी, तिरपाल, लाइट एवं साउंड सिस्टम की व्यवस्था को भी सुनिश्चित कर लिया जाता है।

कहानी की विषयवस्तु और भाषा

कहानी कथन उत्सव का उद्देश्य स्थानीय कहानियों के माध्यम से वहाँ की संस्कृति को समझना है ताकि इन कहानियों का कक्षा शिक्षण में प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सके। इसके लिए कहानी की विषयवस्तु और भाषा, दोनों के चयन में सतर्कता बरतनी होती है।

यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि सुनाई जाने वाली कहानियाँ समुदाय से संबंधित हों। कई बार लिखित भाषा में उपलब्ध कहानियों को भी कहानी वाचक सुना देते हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि कहानी कथन उत्सव से पहले शिक्षक और कार्यक्रम के कार्यकर्ता एक बार कहानी सुनकर यह सुनिश्चित कर लें कि पाठ्यपुस्तकों या किसी अन्य लिखित स्रोत की कहानियों का उपयोग नहीं किया गया है। मौखिक भाषा की सामुदायिक कहानियों की विषयवस्तु मुख्य रूप से पक्षियों, जानवरों, गाँव, सूरज, चंद्रमा, सामाजिक घटनाओं, फल-फूल, पौधों, जंगल, खेत और बच्चों से जुड़ी होती है। साथ ही, जब कहानी वाचक कहानी सुनाते हैं, तो वह लिखित भाषा की तरह भाषायी रूप से परिष्कृत नहीं होती। कई बार इनमें दोहराव अधिक होता है।

कहानी कथन उत्सव में कहानी वाचक को अपनी भाषा में कहानी सुनाने की स्वतंत्रता होती है। आयोजन के समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक होता है कि प्रतिभागी बच्चे भी कहानी वाचक की भाषा से परिचित हों। बच्चों के समूह बनाते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि कहानी वाचक और बच्चों की भाषा एक हो। उदाहरण के लिए, बस्तर में कई कहानी वाचक गोंडी भाषा में कहानी सुनाते हैं, लेकिन बस्तर के सभी बच्चों को गोंडी नहीं आती। ऐसी स्थिति में बच्चों के समूह बनाते हुए यह सुनिश्चित करना जरूरी हो जाता है कि बच्चे भी गोंडी समझते हों। इसी तरह, जिन शिक्षकों को कहानी को लिखने की जिम्मेदारी दी जाती है, उनके लिए भी यह आवश्यक है कि वे गोंडी भाषा समझते हों।

3.4. कहानी-कथन उत्सव का दिन

कहानी उत्सव के आयोजन के दिन केंद्र स्कूल में बच्चों के लिए समुचित व्यवस्थाएँ (टेंट, दरी, पानी, भोजन आदि) की जाती है। कहानीकारों के अतिरिक्त समीपवर्ती गाँवों से स्थानीय समुदाय के लोगों को भी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। कार्यक्रम का शुभारंभ लगभग 10:30 बजे औपचारिक उद्घाटन समारोह के साथ किया। इस समारोह में गाँव के सरपंच, पंच, स्कूल के प्रधानाध्यापक, संबंधित स्कूलों के शिक्षक एवं संकुल समन्वयक, नींव कार्यक्रम प्रतिनिधि, प्रतिभागी बच्चे और कहानी वाचक उपस्थित होते हैं। उद्घाटन समारोह के दौरान कार्यक्रम के उद्देश्यों को सभी के साथ साझा किया जाता है। तथा संपूर्ण रूपरेखा से सभी को अवगत कराया जाता है।

कहानी-कथन सत्र का आयोजन

उद्घाटन कार्यक्रम के पश्चात बच्चों को 7-8 के समूहों में विभाजित किया जाता है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि कक्षा 3 से कक्षा 5 के बच्चों के समूह अलग बनाए जाएँ, जबकि कक्षा 1 और कक्षा 2 के बच्चों के लिए अलग समूह निर्धारित किए जाएँ। प्रत्येक समूह के लिए एक कहानी वाचक नियुक्त किया जाता है। जैसे- उपस्थित शिक्षकों की निगरानी में बच्चों को कहानी सुनाने की प्रक्रिया आरंभ करते हैं। कहानीकारों ने स्थानीय भाषा अथवा हिंदी में कहानियाँ सुनाते हैं। बच्चों और समूह से जुड़े शिक्षक पूरी एकाग्रता से कहानियों को सुनाते हैं। यदि बच्चे किसी कहानी को ठीक से समझ नहीं पाते, तो कहानी वाचक उन्हें आवश्यकतानुसार दो से तीन बार पुनः कहानी सुनाते है।

जब कहानीवाचक और शिक्षक यह सुनिश्चित कर लेते है कि बच्चों ने कहानी को भली-भाँति समझ लिया है, तब उस समूह के बच्चों को कहानी लेखन के लिए ।-4 आकार के पेपर, पेंसिल, रबर आदि प्रदान किए जाते हैं, और वे सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना प्रारंभ करते हैं।

बच्चे अपनी कहानियाँ हिंदी, स्थानीय भाषा अथवा मिश्रित भाषा में लिखते, जिसके लिए वे स्वयं की श्रवण, समझने की क्षमता, पात्रों एवं घटनाओं की कल्पना शक्ति का उपयोग करते। कहानी लिखने के उपरांत वे कहानी की घटनाओं से संबंधित चित्र बनाते और उन्हें रंगों से सजीव करते है. बच्चों के साथ-साथ हरेक समूह में एक शिक्षक साथी जुड़े होते हैं जो कहानी वाचक द्वारा सुनाई गई कहानी को व्यवस्थित तरीके से डॉक्यूमेंट करते है।

कार्यक्रम के समापन के बाद, बच्चों की लिखी कहानियों और बनाए गए चित्रों की समीक्षा की जाती है। चयनित कहानियों को जिला स्तर पर प्रस्तुत किया जाता है, जहाँ इनका संपादन कर शैक्षिक सामग्री के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इन कहानियों को स्कूल की लाइब्रेरी में संग्रहित किया जाता है और अभिभावकों के साथ साझा किया जाता है।

मुख्य निष्कर्ष और सीख 4

कहानी सुनाने और सुनने की परंपरा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव सभ्यता। समाज और समुदायों ने हमेशा से अपनी संस्कृति, परंपराएँ, मूल्यों और अनुभवों को साझा करने के लिए कहानियों का उपयोग किया है। यह परंपरा हमें प्राचीन शैल चित्रों से लेकर आधुनिक साहित्य तक विविध रूपों में देखने को मिलती है।

समय के साथ, कहानियाँ समाज की सोच, परंपराओं और जीवनशैली को प्रतिबिंबित करती रही हैं। प्राचीन समय के शैल चित्रों में हमें शिकार, कृषि, सामूहिक उत्सवों और पारंपरिक अनुष्ठानों के चित्रण मिलते हैं, जो उस काल के समाज की जीवनशैली को समझने में मदद करते हैं। जैसे-जैसे सभ्यताएँ विकसित हुईं और लेखन प्रणाली परिष्कृत हुई, कहानियों ने महाकाव्य, लोककथाओं और साहित्य के रूप में नया स्वरूप ग्रहण किया। इस प्रकार, कहानियाँ समाज के ज्ञान, संस्कृति और ऐतिहासिक परंपराओं की वाहक बनीं।

आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कहानी को सीखने-सिखाने के एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखा जाता है। यह बच्चों की भाषा विकास, संज्ञानात्मक सोच और कल्पनाशक्ति को बढ़ाने में सहायक होती है। किंतु, वर्तमान शिक्षा प्रणाली के शीर्ष-से-नीचे (top&down) मॉडल ने स्थानीय कहानियों को स्कूलों में हाशिए पर धकेल दिया है। शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि बच्चों के अपने परिवेश की कहानियों के अनुपस्थित रहने से वे पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियों से जुड़ाव महसूस नहीं कर पाते और सीखने में संघर्ष करते हैं। इस समस्या का समाधान निकालने के लिए शिक्षा शास्त्रियों ने बच्चों की मातृभाषा में कही जाने वाली कहानियों को शिक्षा में शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया है।

बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत कहानी-कथन उत्सव इसी उद्देश्य की पूर्णता हेतु प्रारंभ किया गया। इस पहल का उद्देश्य स्कूलों में स्थानीय कहानियों के उपयोग को बढ़ावा देना और समुदाय को शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ना है। विगत तीन वर्षों से बस्तर के 200 स्कूलों में यह आयोजन किया जा रहा है। इस प्रक्रिया से हमने कहानी-कथन उत्सव के आयोजन, उसके प्रभावों, चुनौतियों और आगे की संभावनाओं को समझने का अवसर प्राप्त किया है। इस अध्याय में हम इन महत्वपूर्ण निष्कर्षों को विस्तार से प्रस्तुत करेंगे।

4.1. मुख्य निष्कर्ष

1. स्थानीय कहानियों को शैक्षणिक संसाधन के रूप में स्वीकार करना

इस कार्यक्रम के आरंभ में जब समुदाय और अभिभावकों के साथ कहानी-कथन उत्सव के आयोजन को लेकर चर्चा की गई, तो यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश लोगों को भाषा सीखने में कहानियों, कविताओं और गीतों की भूमिका के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। इसके कारण वे अपनी स्थानीय कहानियों को अकादमिक संसाधन के रूप में नहीं देखते थे। इस उत्सव का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह रहा कि समुदाय ने अपनी कहानियों के शैक्षणिक उपयोग की संभावनाओं को समझना शुरू किया। हमें विभिन्न गाँवों और समुदायों में इसके प्रमाण देखने को मिले कि लोग अब अपनी कहानियों को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानने लगे हैं।

2. समुदाय की भागीदारी में वृद्धि

कार्यक्रम के कार्यकाल में यह देखा गया कि पहले वर्ष की तुलना में दूसरे और तीसरे वर्ष में समुदाय की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अब लोग यह समझने लगे कि उनकी लोककथाएँ, गीत और परंपराएँ केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं हैं, बल्कि वे स्कूली शिक्षा के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं। इस बदलते दृष्टिकोण ने स्कूलों और समुदाय के बीच की दूरी को कम करने का कार्य किया है। इससे माता-पिता, विशेषकर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावक, स्कूल की गतिविधियों से अधिक जुड़ने लगे हैं और बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में उनकी रुचि बढ़ी है।

3. स्कूलों में नवाचार का विस्तार

ग्रामीण स्कूलों में कहानी-कथन उत्सव का आयोजन एक अभिनव प्रयास है। पिछले तीन वर्षों के अनुभव यह दर्शाते हैं कि जब बच्चे कहानियाँ लिखते हैं और उन पर चित्र बनाते हैं, तो वे पूरी तल्लीनता के साथ इस प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं। कक्षा में समय-सीमा के कारण ऐसी तल्लीनता सामान्यत: कम देखने को मिलती है। यह स्वतंत्रता बच्चों को आत्मनिर्भर बनने और सीखने की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करती है।

4. स्थानीय कहानियों से बच्चों का जुड़ाव बढ़ना

इस उत्सव के दौरान बच्चों ने न केवल कहानियाँ सुनीं, बल्कि उनके आधार पर चित्र बनाए और स्वयं भी कहानियाँ लिखने का प्रयास किया। इस प्रकार की गतिविधियों ने बच्चों में अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता और जिज्ञासा को बढ़ावा दिया। कई स्कूलों में अभिभावकों ने शिक्षकों को यह बताया कि उत्सव के बाद बच्चे घर में सुनी जाने वाली कहानियों के बारे में अधिक सवाल पूछने लगे हैं, जिससे समुदाय में भी इन कहानियों को पुन: जीवंत करने की एक नई शुरुआत हुई है।

5. स्थानीय कहानियों का शिक्षा में प्रयोग

इस उत्सव का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव यह रहा कि पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों के माता-पिता स्कूलों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने लगे हैं। कई अभिभावकों ने स्कूल में कहानियाँ सुनाने की पहल की है। कुछ शिक्षकों ने बताया कि उत्सव के बाद समुदाय के बुजुर्गों ने उनसे चर्चा कर यह जानने की इच्छा जताई कि क्या उनकी पुरानी कहानियों को स्कूली पाठ्यक्रम में किसी तरह शामिल किया जा सकता है।

6. स्कूल और समुदाय के बीच संबंध मजबूत होना

कहानी-कथन उत्सव के अनुभवों से यह स्पष्ट हुआ कि इस प्रकार की गतिविधियाँ स्कूल और समुदाय के बीच संबंधों को मजबूत करने में सहायक हैं। इससे न केवल बच्चों और शिक्षकों को लाभ हुआ, बल्कि अभिभावकों को भी यह एहसास हुआ कि वे बच्चों की शैक्षणिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और उनकी पढ़ाई में मदद कर सकते हैं।

7. स्थानीय कहानियों को स्कूलों में स्थान देना

कुछ स्कूलों में शिक्षकों ने कहानी-कथन उत्सव के दौरान संग्रहित कहानियों को पोस्टर के रूप में कक्षाओं में लगाया है। स्थानीय कहानियों को शैक्षणिक संसाधन (TLM) के रूप में स्वीकार करना और प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग करना अपने आप में एक बड़ा परिवर्तन है। यह कहानी-कथन उत्सव की एक प्रमुख उपलब्धि है, जिसने स्थानीय भाषा और संस्कृति को औपचारिक शिक्षा प्रणाली के भीतर एक शिक्षण संसाधन के रूप में स्थापित करने में सहायता की है।

बस्तर में आयोजित कहानी-कथन उत्सव ने यह सिद्ध किया है कि स्थानीय कहानियों को स्कूलों में शामिल करने से बच्चों की भाषा, संज्ञानात्मक क्षमता और रचनात्मकता में सुधार होता है। यह पहल न केवल शिक्षकों और बच्चों के लिए लाभदायक रही है, बल्कि समुदाय को भी शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा बनाने में सफल रही है। हालाँकि, इस पहल को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए समुदाय के साथ निरंतर जुड़ाव और स्थानीय कहानियों के शैक्षणिक उपयोग पर और अधिक कार्य करने की आवश्यकता होगी। इस पहल ने यह दर्शाया है कि कहानियों का सही प्रयोग शिक्षा को अधिक रोचक, प्रभावी और समावेशी बना सकता है। भविष्य में, इसे और अधिक स्कूलों में विस्तारित करने और स्थानीय समुदायों की भागीदारी को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए।

4.2. भविष्य की दिशाएँ एवं संस्तुतियाँ

1. स्थानीय भाषाओं में शैक्षिक सामग्री का विकास

स्थानीय समुदायों में प्रचलित कहानियों को संकलित कर स्कूली पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए। इससे न केवल कहानी-कथन की परंपरा को पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी, बल्कि बच्चों को अपनी मातृभाषा में पढ़ने और सीखने का अवसर भी मिलेगा। शिक्षकों, शोधकर्ताओं और समुदाय के बुजुर्गों को मिलकर इन कहानियों को संरक्षित करने और कक्षा शिक्षण के लिए उपयुक्त रूप में तैयार करने की दिशा में काम करना चाहिए।

2. अभिभावकों और शिक्षकों की सहभागिता

स्कूलों में नियमित रूप से कहानी-कथन सत्र आयोजित किए जाने चाहिए, जिनमें शिक्षक, समुदाय के बुजुर्ग, माता-पिता और पारंपरिक कहानी वाचक भी भाग लें। इससे न केवल कहानी-कथन की परंपरा को पुनर्जीवित करने में सहायता मिलेगी, बल्कि समुदाय की सक्रिय भागीदारी को भी बढ़ावा मिलेगा।

3. तकनीकी संसाधनों का उपयोग

कहानियों को डिजिटल माध्यमों में संरक्षित करने की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए। ऑडियोबुक, वीडियो, पॉडकास्ट, और अन्य डिजिटल साधनों के माध्यम से इन कहानियों को संरक्षित और प्रचारित किया जा सकता है। इससे ये कहानियाँ केवल कक्षा शिक्षण तक सीमित न रहकर व्यापक स्तर पर उपलब्ध हो सकेंगी।

4. शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षकों को कहानी-कथन की विधियों, भाषा शिक्षण में इसके महत्व, और नवाचारों पर विशेष प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। यह प्रशिक्षण शिक्षकों को यह समझाने में मदद करेगा कि कहानियाँ बच्चों की भाषा-सीखने की प्रक्रिया में किस प्रकार सहायक हो सकती हैं और उन्हें शिक्षण में किस प्रकार से एकीकृत किया जा सकता है।

5. नीतिगत समर्थन

बहुभाषी शिक्षा को शिक्षा नीति में समाहित कर इसे संस्थागत रूप दिया जाना चाहिए। जब तक बहुभाषी शिक्षा को नीतिगत समर्थन नहीं मिलेगा, तब तक इस तरह की पहलें केवल छोटे स्तर पर ही सीमित रह जाएँगी और उनका दीर्घकालिक प्रभाव नहीं पड़ पाएगा।

“बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम में कहानी कथन उत्सव के तहत जब यही लोग अपनी भाषा और संस्कृति को लोककथाओं के माध्यम से अगली पीढ़ी तक पहुँचाते हैं तब कहीं-न-कहीं इस बात की संतुष्टि होती है कि कुछ और वर्षों तक बस्तर अपनी अनूठी पहचान के साथ जीवित रहेगा। बस्तर में स्कूल और समुदाय को जोड़ने वाला यह कहानी कथन उत्सव वास्तव में बच्चों की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है और मैं पूरी तरह से आश्वस्त हूँ कि हमारी अगली पीढ़ी निश्चित रूप से अपनी संस्कृति और लोककथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाएगी।”

श्री अखिलेश मिश्रा
ज़िला मिशन समन्वयक,
बस्तर, छत्तीसगढ़

“मैंने कई कहानी कथन उत्सवों में भागीदारी की है। समुदाय और बच्चों का उत्साह उस दिन देखने योग्य होता है। एक मेले जैसा आयोजन होता है जिसमें सभी बराबर की भूमिका निभाते हैं। मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि यह कहानी कथन उत्सव बच्चों के सीखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।”

श्री राजेन्द्र सिंह ठाकुर
खंड स्रोत समन्वयक, बस्तर, छत्तीसगढ़

“कहानी कथन उत्सवों में शिक्षा और लोकसंस्कृति का संगम स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। समुदाय के लोग न सिर्फ कहानी सुनाने आते हैं बल्कि उनका योगदान पूरे कार्यक्रम को आयोजित करने में भी होता है। इस तरह की सहभागिता सचमुच उल्लेखनीय है और स्कूल-समुदाय के बीच के संबंधों को मजबूती देने की ओर एक कदम है।”

श्री अमित अवस्थी
संकुल अकादमिक समन्वयक-चित्रकोट,
बस्तर, छत्तीसगढ़

परिशिष्ट-1

कहानी-कथन उत्सव के नोडल केंद्र और संबंधित स्कूलों की सूची

बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के तहत अकादमिक सत्र 2022-23 में कहानी-कथन उत्सव का आयोजन बस्तर और दरभा विकासखंड के 200 स्कूलों में किया गया। यह आयोजन दिसंबर से फरवरी माह के बीच तीनों वर्षों में नोडल केंद्रों पर संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में शामिल सभी नोडल केंद्रों और उनसे संबंधित स्कूलों की सूची नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत की गई है। कुछ अपवादों को छोड़कर, अधिकांश कहानी-कथन उत्सव का आयोजन इस सूची के आधार पर किया गया है।

क्र.	नोडल/केन्द्र स्कूल	सभी भागीदार स्कूल	संकुल केन्द्र	ब्लॉक
1.	प्राथमिक शाला धावड़ागुड़ा	प्राथमिक शाला धावड़ागुड़ा, प्राथमिक शाला बड़ेआमाबाल, प्राथमिक शाला पंडरापारा, प्राथमिक शाला बड़ेआमाबाल	बड़ेआमाबाल	बस्तर
2.	प्राथमिक शाला मारीगुड़ा बालेंगा	प्राथमिक शाला मारीगुड़ा बालेंगा, प्राथमिक शाला ओगायगुड़ा, प्राथमिक शाला पूजारीपारा	बालेंगा	बस्तर
3.	प्राथमिक शाला पोड़ईगुड़ा	प्राथमिक शाला पोड़ईगुड़ा, प्राथमिक शाला डेंगपारा खड़का, प्राथमिक शाला खड़का	सोरगांव	बस्तर
4.	प्राथमिक शाला कलारपारा	प्राथमिक शाला कलारपारा, प्राथमिक शाला महुभाटा, प्राथमिक शाला मुरकुची	मुरकुची	बस्तर
5.	प्राथमिक शाला बागमोहलाई	प्राथमिक शाला बागमोहलाई, बालक आश्रम केरागुड़ा बागमोहलाई, प्राथमिक शाला कोटेकामा, प्राथमिक शाला पूजारीगुड़ा बागमोहलाई, प्राथमिक शाला कोसमियागुड़ा बागमोहलाई	बागमोहलाई	बस्तर

क्र.	नोडल/केन्द्र स्कूल	सभी भागीदार स्कूल	संकुल केन्द्र	ब्लॉक
6.	प्राथमिक शाला इच्छापुर	प्राथमिक शाला इच्छापुर, प्राथमिक शाला पटेलपारा इच्छापुर	इच्छापुर	बस्तर
7.	प्राथमिक शाला भाटपाल	प्राथमिक शाला भाटपाल, प्राथमिक शाला भरनी, प्राथमिक शाला आड़ावाल, प्राथमिक शाला भुरसुंडी, प्राथमिक शाला झपटगुड़ा, प्राथमिक शाला सरपंचपारा महुपाल बरई, प्राथमिक शाला पटेलपारा भरनी, प्राथमिक शाला नारनपाल, प्राथमिक शाला पटेलपारा भाटपाल	आड़ावाल	बस्तर
8.	प्राथमिक शाला हिरलाभाटा	प्राथमिक शाला हिरलाभाटा, प्राथमिक शाला सिवनी, प्राथमिक शाला केवटापारा सिवनी	सिवनी	बस्तर
9.	प्राथमिक शाला बड़ेअलनार	प्राथमिक शाला बड़ेअलनार, प्राथमिक शाला कुम्हारपारा देवड़ा, प्राथमिक शाला देवड़ा, प्राथमिक कन्या आश्रम देवड़ा	देवड़ा	बस्तर
10.	प्राथमिक शाला पोड़ईगुड़ा	प्राथमिक शाला पोड़ईगुड़ा, प्राथमिक शाला मुरुमभाटा	तुरपुरा	बस्तर
11.	प्राथमिक शाला मावलीगुड़ा	प्राथमिक शाला मावलीगुड़ा, प्राथमिक शाला फरसागुड़ा, प्राथमिक शाला जुनावाही, प्राथमिक शाला पदरपारा, प्राथमिक शाला बड़ेपारा फरसागुड़ा	फरसागुड़ा	बस्तर
12.	प्राथमिक शाला जामगुड़ा	प्राथमिक शाला जामगुड़ा, प्राथमिक शाला अमलीगुड़ा, प्राथमिक शाला नंदपुरा, कन्या आश्रम नंदपुरा, प्राथमिक शाला पिपलावंड	पिपलावंड	बस्तर
13.	प्राथमिक शाला तालुर	प्राथमिक शाला तालुर, प्राथमिक शाला बेसरापाल तालुर, प्राथमिक शाला सेमलनार	तालुर	बस्तर
14.	प्राथमिक शाला खोरखोसा-1	प्राथमिक शाला खोरखोसा-1, प्राथमिक शाला खोरखोसा-2, प्राथमिक शाला मारीपारा सितलावंड	खोरखोसा	बस्तर

क्र.	नोडल/केन्द्र स्कूल	सभी भागीदार स्कूल	संकुल केन्द्र	ब्लॉक
15.	प्राथमिक शाला सालेमेटा-1	प्राथमिक शाला सालेमेटा -1, प्राथमिक शाला अक्षयनगर सालेमेटा -1, प्राथमिक शाला खंडसरा, प्राथमिक शाला भटीपारा खंडसरा	सालेमेटा-1	बस्तर
16.	प्राथमिक शाला आवासप्लाट घाटलोहंगा	प्राथमिक शाला आवासप्लाट घाटलोहंगा, प्राथमिक शाला घाटलोंहंगा, प्राथमिक शाला गुचागुड़ा कोलचुर, प्राथमिक शाला कुदालगांव	घाटलोहंगा	बस्तर
17.	प्राथमिक शाला जनपद चपका	प्राथमिक शाला जनपद चपका, प्राथमिक शाला फाफनी चपका, प्राथमिक शाला मारीपारा	चपका	बस्तर
18.	प्राथमिक शाला मुन्जला	प्राथमिक शाला मुन्जला, प्राथमिक शाला बड़ेपारा तारागांव	तारागांव	बस्तर
19.	प्राथमिक शाला घोटिया	प्राथमिक शाला घोटिया, प्राथमिक शाला पुजारीपारा घोंटिया, प्राथमिक शाला आलवाही, प्राथमिक शाला नारायणपाल	घोटिया	बस्तर
20.	प्राथमिक बा.आ. शाला पश्चिम टेमरा	प्राथमिक बा.आ. शाला पश्चिम टेमरा, प्राथमिक शाला पश्चिम टेमरा, प्राथमिक शाला गुड़ापारा	पश्चिम टेमरा	बस्तर
21.	प्राथमिक शाला टाकरागुड़ा	प्राथमिक शाला टाकरागुड़ा, प्राथमिक शाला महुपालबरई	एक्टागुड़ा	बस्तर
22.	प्राथमिक शाला बोडनपाल-1	प्राथमिक शाला बोडनपाल-1, प्राथमिक शाला पटेलपारा बोडनपाल-1, प्राथमिक शाला पदरगुड़ापारा, प्राथमिक शाला खासपारा, प्राथमिक शाला पल्ली चकवा	बोडनपाल	बस्तर
23.	प्राथमिक शाला बोडनपाल-2	प्राथमिक शाला बोडनपाल-2, कन्या आश्रम शाला बसोली, प्राथमिक शाला खालेपारा, प्राथमिक शाला बसोली	बोडनपाल 2	बस्तर

क्र.	नोडल/केन्द्र स्कूल	सभी भागीदार स्कूल	संकुल केन्द्र	ब्लॉक
24.	प्राथमिक शाला बाकेल	प्राथमिक शाला बाकेल, प्राथमिक शाला कोंगालगुड़ा, प्राथमिक शाला ओंडारकोट, प्राथमिक शाला कन्या आश्रम बाकेल	बाकेल	बस्तर
25.	प्राथमिक शाला शिवनागुड़ा	प्राथमिक शाला शिवनागुड़ा, प्राथमिक शाला कोलचुर, प्राथमिक शाला पुजारीपारा कोलचुर, प्राथमिक शाला टिकरालोंहगा	कोलचुर	बस्तर
26.	प्राथमिक शाला छोटेआमाबाल	प्राथमिक शाला छोटेआमाबाल, प्राथमिक शाला टेमरूगुड़ा	चमिया	बस्तर
27.	प्राथमिक शाला मुण्डागाँव	प्राथमिक शाला मुण्डागाँव, प्राथमिक शाला सिरहापारा मुण्डागाँव, प्राथमिक शाला मावलीगुड़ा	मुण्डागाँव	बस्तर
28.	प्राथमिक शाला बनियागाँव	प्राथमिक शाला बनियागाँव, प्राथमिक शाला कुचीगुड़ा, प्राथमिक शाला पटेलपारा	बनियागाँव	बस्तर
29.	प्राथमिक शाला घाटकवाली (शि.वि.)	प्राथमिक शाला घाटकवाली (शि.वि.), प्राथमिक शाला कुड़कानार, प्राथमिक शाला खालेपारा कुड़कानार, प्राथमिक शाला कविआसना, प्राथमिक शाला घाटकवाली	कुड़कानार	बस्तर
30.	प्राथमिक शाला फरसापारा	प्राथमिक शाला फरसापारा, प्राथमिक शाला डोंगरीपारा बस्तर, प्राथमिक शाला कारीतरई, प्राथमिक शाला बागबहार, प्राथमिक शाला कोलियापारा	फरसापारा	बस्तर
31.	प्राथमिक शाला जनपद बस्तर	प्राथमिक शाला जनपद बस्तर, प्राथमिक शाला मांझीपारा बस्तर	बस्तर	बस्तर
32.	प्राथमिक शाला पराली	प्राथमिक शाला पराली, प्राथमिक शाला कुरलूगुड़ा, प्राथमिक शाला बड़ेचकवा	बड़ेचकवा	बस्तर
33.	प्राथमिक शाला भोंड़	प्राथमिक शाला भोंड़, प्राथमिक शाला पूंजीगुड़ा, प्राथमिक शाला सरगीगुड़ा, प्राथमिक शाला पांडूपारा	भोंड़	बस्तर

क्र.	नोडल/केन्द्र स्कूल	सभी भागीदार स्कूल	संकुल केन्द्र	ब्लॉक
34.	प्राथमिक शाला कन्या आश्रम भानपुरी	प्राथमिक शाला कन्या आश्रम भानपुरी, प्राथमिक शाला बालक आश्रम भानपुरी, प्राथमिक शाला उपरपारा करन्दोला, प्राथमिक शाला जनपद भानपुरी	करन्दोला	बस्तर
35.	प्राथमिक शाला बांसपानी	प्राथमिक शाला बांसपानी, प्राथमिक शाला गोंदियापाल, प्राथमिक शाला गुड़ीपारा बांसपानी	गोंदियापाल	बस्तर
36.	प्राथमिक शाला भटीपारा	प्राथमिक शाला भटीपारा, प्राथमिक शाला पटेल पारा	कुंगारपाल	बस्तर
37.	प्राथमिक शाला मुंडकटियापारा मधोता	प्राथमिक शाला मुंडकटियापारा मधोता, प्राथमिक शाला जनपद मधोता, प्राथमिक शाला रोतमापारा मधोता	खड़का	बस्तर
38.	प्राथमिक शाला टिकनपाल	प्राथमिक शाला टिकनपाल, प्राथमिक शाला उसरी, प्राथमिक शाला सोनारपाल	सोनारपाल	बस्तर
39.	प्राथमिक शाला मुण्डापाल	प्राथमिक शाला मुण्डापाल, प्राथमिक शाला सिगड़ीतरई, प्राथमिक शाला टोंडागुड़ा	चोकर	बस्तर
40.	प्राथमिक शाला डेंगगुड़ा मान्दलापाल	प्राथमिक शाला डेंगगुड़ा मान्दलापाल, प्राथमिक शाला बड़ेपारा, प्राथमिक शाला मांदलापाल, प्राथमिक शाला मारीपारा	मान्दलापाल	बस्तर
41.	प्राथमिक शाला राजपुर	प्राथमिक शाला राजपुर, प्राथमिक शाला पटेलपारा राजपुर, प्राथमिक शाला सरगीगुड़ा राजपुर	राजपुर	बस्तर
42.	प्राथमिक शाला भैंसगाँव	प्राथमिक शाला भैंसगाँव, प्राथमिक शाला बोदरा	भैंसगाँव	बस्तर
43.	प्राथमिक शाला चंद्रगिरी	प्राथमिक शाला चंद्रगिरी	चंद्रगिरी	दरभा
44.	कन्या आश्रम शाला चितापुर	कन्या आश्रम शाला चितापुर, प्राथमिक शाला चितापुर, प्राथमिक शाला धीरागुड़ा	चितापुर	दरभा

क्र.	नोडल/केन्द्र स्कूल	सभी भागीदार स्कूल	संकुल केन्द्र	ब्लॉक
45.	प्राथमिक शाला छिंदबहार	प्राथमिक शाला छिंदबहार, प्राथमिक शाला डुरकीगुड़ा	छिंदबहार	दरभा
46.	प्राथमिक शाला पटेलपारा	प्राथमिक शाला पटेलपारा, प्राथमिक शाला जनपद डिलमिली, प्राथमिक शाला पुजारीपारा डिलमिली, प्राथमिक शाला डेंगाआमापारा	डिलमिली,	बस्तर
47.	प्राथमिक शाला कन्या आश्रम चिंगपाल	प्राथमिक शाला कन्या आश्रम चिंगपाल, प्राथमिक शाला केसापुर, प्राथमिक शाला पटेलपारा केसापुर	चिंगपाल	बस्तर
48.	प्राथमिक शाला आश्रम सेडवा	प्राथमिक शाला आश्रम सेडवा, प्राथमिक शाला कांडकीगुड़ा, प्राथमिक शाला लेंड्रा, प्राथमिक शाला भाटागुड़ा	सेडवा	बस्तर

परिशिष्ट-2

कहानी कथन उत्सव की तैयारी हेतु आयोजित कार्यशाला रिपोर्ट

नीवः बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम, जिला बस्तर, छत्तीसगढ़

दिनांकः 25-26 सितंबर 2023
आयोजन स्थलः जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), बस्तर

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन (LLF) बस्तर जिले के 1524 स्कूलों में जिला शिक्षा विभाग, बस्तर के साथ मिलकर नीवः बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम का लागू कर रहा है। इस कार्यक्रम के तहत सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिले के 700 प्राथमिक स्कूलों में कहानी कथन उत्सव के आयोजन की योजना बनाई गई है। इसी संदर्भ में, विकासखंड-बस्तर के 300 स्कूलों में कहानी कथन उत्सव का आयोजन करने हेतु चयनित 50 शिक्षक-समन्वयकों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन 25-26 सितंबर 2023 को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), बस्तर में किया गया।

उद्देश्य

इस प्रशिक्षण कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य स्थानीय परिवेश एवं संदर्भों पर आधारित बच्चों की भाषा, स्तर और रुचि के अनुरूप कहानियों के महत्व को समझना एवं कहानी कथन उत्सव के आयोजन की प्रक्रिया को विस्तार से समझाना था। इस उद्देश्य के लिए कहानी कथन उत्सव से सम्बंधित निम्नलिखित बिन्दुओं को कार्यशाला में शामिल किया गयाः

- बच्चों के पूर्व ज्ञान, परिवेशीय अनुभव और उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का उपयोग करते हुए उन्हें ज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाना।
- बच्चों में सुनने और बोलने के कौशल विकसित करना, जो आगे चलकर पढ़ने और लिखने की दक्षता को मजबूत कर सके।
- सामुदायिक ज्ञान को स्कूल से जोड़ते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को समृद्ध बनाना।
- कहानियों को शिक्षण संसाधन के रूप में उपयोग करने को प्रोत्साहित करना।
- कहानी कथन उत्सव को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने हेतु समुचित रणनीतियों का विकास करना।
- बच्चों और वयस्कों में कहानी कहने और सुनने की कला को बढ़ावा देना।
- समाज में कहानियों की भूमिका एवं उनके सांस्कृतिक महत्व को उजागर करना।

कार्यशाला का विवरण

प्रथम दिवस (25 सितंबर 2023)

कार्यशाला का उद्घाटन DIET प्राचार्य श्री जॉन स्टेनली के उद्बोधन से हुआ। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कहानी कथन उत्सव क्यों आवश्यक है। भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और मान्यताओं के लोग रहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, निपुण भारत और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) जैसे दस्तावेज स्थानीय भाषाओं और समुदाय की भागीदारी को स्कूली शिक्षा में बढ़ावा देने की वकालत करते हैं।

इसके बाद, डॉ. महेंद्र मिश्रा ने प्रशिक्षण सत्र को आगे बढ़ाया। उन्होंने बस्तर की भाषायी स्थिति का आंकड़ों सहित विश्लेषण किया और इस पर विस्तृत चर्चा की कि बच्चे अपनी भाषा कहाँ से सीखते हैं। उन्होंने स्थानीय ज्ञान, परम्पराओं और संस्कृति को प्राथमिक स्थर पर शामिल करने पर विस्तार से चर्चा की और वर्मान कार्यशाला के लिए संदर्भ का निर्माण किया।

समूह चर्चा एवं कार्य

इसके पश्चात, डॉ. महेंद्र मिश्रा ने प्रतिभागियों को पाँच समूहों में विभाजित किया, ताकि वे स्थानीय सांस्कृतिक ज्ञान और कहानी कथन उत्सव के प्रभावों पर विचार-विमर्श कर सकें। प्रत्येक समूह को एक विषय सौंपा गया, जिससे वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को बेहतर तरीके से समझ सकें। इस प्रक्रिया में समुदाय के विभिन्न पहलुओं को केंद्र में रखा गया। प्रत्येक समूह ने निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की और प्रस्तुति दी:

समूह 1: धार्मिक परंपराएँ एवं स्थानीय पर्व-त्योहार: इस समूह ने विभिन्न स्थानीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का विवरण प्रस्तुत किया, जिसमें माटी तिहार, नयाखानी, छेरछेरा, दीपावली, ईद, क्रिसमस, बस्तर दशहरा, गोंचा आदि प्रमुख रहे।

समूह 2: सामाजिक व्यवस्था: इस समूह ने जातिगत, पारंपरिक रीति-रिवाज, सामाजिक न्याय, विवाह-संस्कार, लेन-देन और आधुनिक प्रभावों पर चर्चा की।

समूह 3: आर्थिक व्यवस्था: इस समूह ने कृषि, वनोपज, मजदूरी, हाट-बाजार, पशुपालन, पारंपरिक शिल्प एवं आजीविका के अन्य स्रोतों को रेखांकित किया।

समूह 4: विज्ञान एवं पारंपरिक तकनीकी ज्ञान: इस समूह ने स्थानीय कृषि उपकरण, पेड़-पौधों के औषधीय उपयोग, खाद्य संरक्षण विधियाँ, पारंपरिक जल प्रबंधन, घरेलू शिल्प एवं निर्माण तकनीकों पर प्रकाश डाला।

समूह 5: कला और संस्कृति: इस समूह ने काष्ठकला, बाँसकला, मिट्टीकला, धातुकला, जुटकला, नृत्य, गायन एवं चित्रकला पर चर्चा की।

तालिका : समूहवार प्रस्तुति

समूह सं.	विषय	संकुल केन्द्र
समूह 1	धार्मिक परंपराएँ एवं स्थानीय पर्व-त्योहार	माटी तिहार, नयाखानी, छेरछेरा, दीपावली, अमुस तिहार, नवरात्रि, गणेशोत्सव, ईद, क्रिसमस, बस्तर दशहरा, गोंचा, स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त), गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)
समूह 2	सामाजिक व्यवस्था	जन्म, विवाह, मृत्यु संबंधी रीति-रिवाज, जाति व्यवस्था, त्यौहारों से संबंधित सामाजिक संरचना, पारंपरिक न्याय प्रणाली, पारंपरिक रीति-रिवाज एवं धालूमक-सामाजिक परंपराएँ, शिक्षा का महत्व, सामाजिक व्यवस्था में आधुनिकता का प्रभाव

समूह सं.	विषय	संकुल केन्द्र
समूह 3	आर्थिक व्यवस्था	आय के स्रोत – कृषि, वनोपज, मजदूरी, पशुपालन, मछली पालन, मुर्गी पालन, स्थानीय हाट-बाजार, कर्ज बिहान समूह की आर्थिक गतिविधियाँ, पारंपरिक हस्तशिल्प, कृषि उपकरण निर्माण, घरेलू उद्यम, जैसे- मटका निर्माण, लोहे एवं लकड़ी का कार्य, बांस शिल्प, ईंट निर्माण
समूह 4	विज्ञान एवं पारंपरिक तकनीकी ज्ञान	बैलगाड़ी से ट्रैक्टर तक यात्रा, औषधीय पौधे, खाद्य संरक्षण विधियाँ, पारंपरिक पेय निर्माण, कृषि में नवीन प्रयोग, पारंपरिक निर्माण तकनीक, मिट्टी एवं धातु कार्य, पारंपरिक शिल्पकला, रस्सी एवं कपड़ा निर्माण, पारंपरिक जल प्रबंधन, औजार निर्माण
समूह 5	कला और संस्कृति	काष्ठकला, बाँसकला, मिट्टीकला, धातुकला, जुटकला, नृत्यकला (डंडारी, सुआ, गौर, करमा, मांदरी, राऊत, माडिया नृत्य), गायन (जगार, चैत परब, पंडवानी, पुराण गायन, भजन, विवाह एवं संस्कार गीत), चित्रकला (गोदना, भित्तिचित्र, रंगोली, झोटी)

द्वितीय दिवस (26 सितंबर 2023)

कार्यशाला के दूसरे दिन, प्रतिभागियों को पिछले वर्ष आयोजित कहानी कथन उत्सव के अनुभव साझा करने हेतु पाँच समूहों में विभाजित किया गया।

प्रमुख चर्चा बिंदु

- कहानी कथन उत्सव से बच्चों, शिक्षकों और समुदाय को क्या लाभ हुआ?
- उत्सव के आयोजन में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा और उनके समाधान क्या रहे?
- भाषा सीखने की प्रक्रिया में कहानी कथन उत्सव की क्या भूमिका है?
- समुदाय, कहानी वाचक और शिक्षक इस उत्सव से किस प्रकार जुड़े और उनकी क्या प्रतिक्रियाएँ रहीं?
- कहानी कथन उत्सव को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाए रखने के लिए क्या प्रयास किए जाने चाहिए?

सामूहिक चर्चा, मुख्य निष्कर्ष, एवं सुझाव

- समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु, स्कूलों में प्रत्येक शनिवार को कहानी कथन उत्सव आयोजित किया जाना चाहिए।
- बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करने के लिए चित्रांकन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- कहानीकारों को तैयार करने हेतु शिक्षकों की ओर से मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए।
- कहानी कथन उत्सव को केवल एक वार्षिक कार्यक्रम तक सीमित न रखकर इसे नियमित शैक्षिक गतिविधि के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

कहानी सुनकर लेखन एवं चित्रांकन

प्रशिक्षण के अगले सत्र में कहानी कथन उत्सव का समूह में डेमोन्स्ट्रेशन दिया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने पहले कहानी सुनी, फिर उसे लिखा और उस पर चित्र बनाकर समूह में प्रस्तुत किया। इससे कहानी कथन उत्सव की संपूर्ण प्रक्रिया की व्यावहारिक समझ बनी। प्रत्येक समूह ने एक कहानीकार के माध्यम से कहानी सुनी, फिर उसे लिखकर उसका चित्र तैयार किया।

चतुर कचीम (हल्बी)

एक दिन चो गोट आय गोटक कोलेया भुख काज़े। घूमते रये। उन्ही समय गोटक कचीम के दखलो। दखुन भाँति लार टपकालो आऊर झट नाय कचीम के धरलो आऊर खातो काजे हरीक होऊन जोर से चपलून दिलो आ555 ये लो खुबे हाडा आय, बललो आउर खाउक नी सकलो।

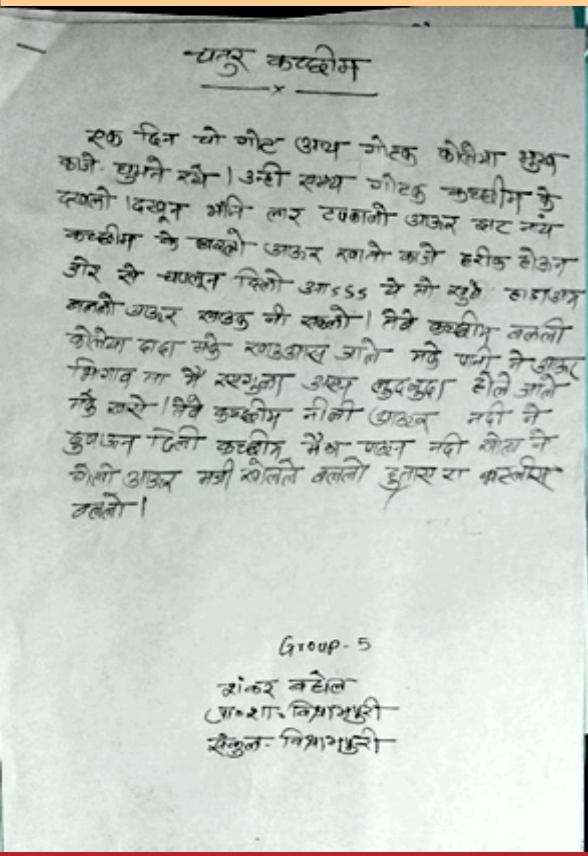

तेबे कचीम बलली कोलेया दादा मके खाउआस जाले मके पानी ने आऊर भिगाव ता मैं रसगुला असन लुदलुदो होले मके खायसे। तेबे कचीम नीली आउर नदी ने ढूबाऊन दिली कचीम, मैका पाउन नदी खोल ने गेलो आऊर मजी खोलले बललो हुताए रा भटलीस बललो।

समझदार पेड़ (हिन्दी)

बहुत पहले की बात है, एक जंगल में एक छोटी सी चिड़िया रहती थी। वह अपने परिवार के लिए नए घोंसले की तलाश में घूम रही थी। एक दिन, चिड़िया घूमते-घूमते नदी किनारे एक पेड़ के पास गई और बोली, 'भाई-भाई, मुझे एक घोंसला बनाना है। क्या आप मुझे पेड़ पर जगह देंगे?'

पेड़ बोला, 'नहीं, मैं नहीं दे सकता।'

चिड़िया नाराज होकर वहाँ से चली गई। कुछ दूर जाने के बाद उसे एक और पेड़ मिला। चिड़िया ने उसे पूछा, 'पेड़ भाई, क्या आप मुझे घोंसला बनाने के लिए जगह देंगे?'

पेड़ ने कहा, 'ठीक है बहन, आप घोंसला बनाकर रह सकती हो।'

चिड़िया खुशी के मारे झूम उठी। कुछ समय बाद भारी वर्षा हुई। नदी में बाढ़ आ गई और पहला पेड़ बहने लगा। चिड़िया ने उस पेड़ को पहचान कर कहा, 'मूर्ख पेड़, तूने मुझे घोंसला बनाने की जगह नहीं दी, आज अच्छा हुआ कि तू जमीन से उखड़ गया।'

तभी पेड़ ने कहा, 'चिड़िया बहन, मैं चाहता तो तुझे जगह दे सकता था, लेकिन मेरी जड़ें कमजोर थीं। अगर तू मेरे ऊपर घोंसला बनाती, तो तू भी मेरे साथ बह जाती। मुझे क्षमा करना।'

सीखः किसी के 'ना' कहने के पीछे भी भलाई हो सकती है।

कहानी

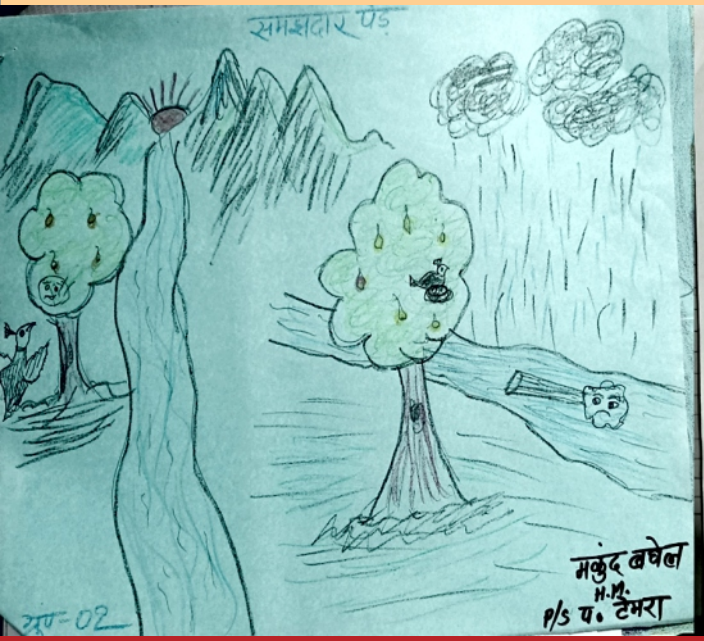

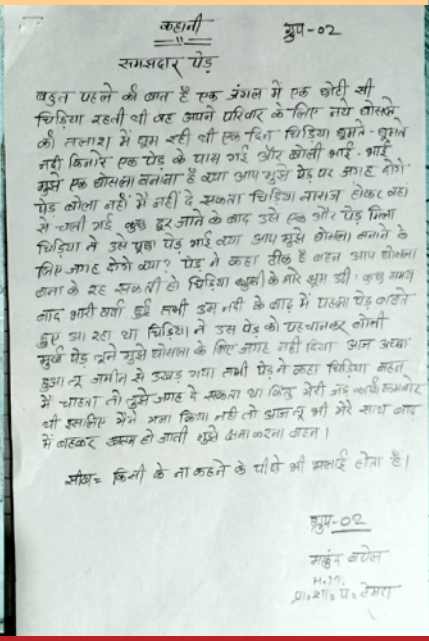

ग्रुप-02

समझदार पेड़

बहुत पहले की बात है एक जंगल में एक छोटी सी चिड़िया रहती थी वह अपने परिवार के लिए नये घोसले की तलाश में घूम रही थी एक दिन चिड़िया घूमते-घूमते नदी किनारे एक पेड़ के पास गई और बोली भाई-भाई मुझे एक घोसला बनाना है क्या आप मुझे पेड़ पर जगह दोगे पेड़ बोला नहीं मैं नहीं दे सकता चिड़िया नाराज होकर वहां से चली गई कुछ दूर जाने के बाद उसे एक और पेड़ मिला चिड़िया ने उसे पूछा पेड़ भाई क्या आप मुझे घोसला बनाने के लिए जगह दोगे क्या? पेड़ ने कहा ठीक है बहन आप घोसला बना के रह सकती हो चिड़िया खुशी के मारे झूम उठी। कुछ समय बाद भारी वर्षा हुई तभी उस नदी के बाढ़ में पहला पेड़ बहते हुए आ रहा था चिड़िया ने उस पेड़ को पहचानकर बोली मुर्ख पेड़ तूने मुझे घोसला के लिए जगह नही दिया आज अच्छा हुआ तू जमीन से उखड़ गया तभी पेड़ ने कहा चिड़िया बहन मैं चाहता तो तुझे जगह दे सकता था किंतु मेरी जड़ काफी कमजोर थी इसलिए मैंने मना किया नही तो आज तू भी मेरे साथ बाढ़ में बहकर खत्म हो जाती मुझे क्षमा करना बहन।

सीख= किसी के ना कहने के पीछे भी भलाई होता है।

ग्रुप-02

मकुंद बघेल
H.M.
प्रा॰शा॰ प॰ टेमरा

कार्यशाला के अगले सत्र में में चयनित शिक्षकों के साथ कहानी कथन उत्सव के तैयारी से जुड़े सभी व्यावहारिक बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गयी जिसमें संसाधनों को जुटाना, आयोजन के समय जलपान, स्वागत समारोह, व्यवस्थापन, कार्यशाला में बच्चों की भागीदारी, कहानीकार की भूमिका इत्यादि पर विस्तार से चर्चा की गयी.

निष्कर्ष

कहानी कथन उत्सव केवल बच्चों की भाषा सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध बनाते हैं, बल्कि शिक्षा को अधिक सार्थक, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाने में भी सहायक सिद्ध होते हैं। अपने अपने नोडल स्कूलों में कहानी कथन उत्सव को क्रियान्वित करने के संकल्प के साथ कार्यशाला का समापन किया गया.

(रिपोर्ट संकलन: सुरेंद्र विश्वकर्मा और भारत साहू, LLF, बस्तर)

परिशिष्ट-3

कहानी कथन उत्सव के नोडल केंद्र के शिक्षक-समन्वयकों के लिए आयोजित कार्यशाला की सत्र योजना

क्र.	सत्र का नाम	उद्देश्य	सामग्री एवं तरीका
1.	सामुदायिक ज्ञान क्या है?	• प्रतिभागी समझेंगे कि सामुदायिक ज्ञान (Community Knowledge) क्या है और इसका स्थानीय संदर्भ में क्या महत्व है। • यह स्पष्ट होगा कि बच्चों की शिक्षा में सामुदायिक ज्ञान का क्या योगदान है। • भाषा शिक्षा में इसे किस प्रकार जोड़ा जाए, इस पर चर्चा होगी।	• प्रेजेंटेशन (PPT) • आपसी चर्चा और संवाद • समूह गतिविधियाँ • सामुदायिक ज्ञान पर आधारित विस्तृत हैंडआउट
2.	कहानियाँ और शिक्षण शास्त्र	• प्रतिभागी समझेंगे कि कहानियाँ शिक्षण में क्यों महत्वपूर्ण हैं। • कहानियों को सीखने-सिखाने के संसाधन के रूप में उपयोग करने की जरूरत को समझेंगे। • कहानी-कथन के माध्यम से कक्षा में गतिविधियों को किस प्रकार जोड़ा जा सकता है।	• प्रेजेंटेशन (PPT) • प्रतिभागियों के अनुभव साझा करना • समूह चर्चा और विश्लेषण
3.	कहानी-कथन उत्सव का परिचय एवं आयोजन प्रक्रिया	• प्रतिभागी सीखेंगे कि कहानी-कथन उत्सव (Storytelling Festival) की संकल्पना क्या है। • उत्सव के उद्देश्य और अपेक्षित शैक्षिक परिणामों को समझेंगे। • 138 स्थानों पर आयोजित होने वाले उत्सव की रूपरेखा और व्यवस्थाओं को जानेंगे। • 700 स्कूलों में इस उत्सव को संचालित करने हेतु आवश्यक प्रक्रियाएँ सीखेंगे।	• प्रेजेंटेशन (PPT) • समूह चर्चा • कहानी-कथन से संबंधित विस्तृत हैंडआउट

क्र.	सत्र का नाम	उद्देश्य	सामग्री एवं तरीका
4.	कहानी-कथन उत्सव का प्रदर्शन एवं व्यावहारिक अभ्यास	• प्रतिभागी वास्तविक रूप में कहानी-कथन उत्सव का अनुभव करेंगे। • उत्सव के दौरान अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं को व्यवहारिक रूप में समझेंगे। • कहानी-कथन को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करेंगे।	• कहानी-कथन का प्रदर्शन • शिक्षकों और प्रतिभागियों द्वारा अभ्यास • रचनात्मक गतिविधियाँ (चार्ट पेपर, ड्राइंग, लेखन) • आवश्यक सामग्री: चार्ट पेपर, स्केच पेन, पेंसिल, रबर, कटर, स्केल, क्रेयक्रन और रंगीन कागज, I4 साइज पेपर (प्रतिभागियों की संख्या के अनुसार)
5.	200 स्कूलों में कहानी-कथन उत्सव का संचालन एवं दस्तावेजीकरण	• 48 स्कूलों के शिक्षक-समन्वयक 200 स्कूलों में कहानी-कथन उत्सव के सफल संचालन की प्रक्रिया को समझेंगे। • उत्सव के आयोजन, प्रबंधन और दस्तावेजीकरण के प्रभावी तरीकों से अवगत होंगे। • कहानी-कथन उत्सव के प्रभावों का मूल्यांकन कैसे किया जाए, इस पर चर्चा होगी।	• समूह चर्चा और अनुभव साझा करना • दस्तावेजीकरण के प्रभावी तरीकों पर चर्चा

संभावित परिणाम:

- शिक्षक-समन्वयकों को समुदाय और स्कूल के अंतर्संबंध को समझने में सहायता मिलेगी।
- शिक्षण में कहानियों के प्रभावी उपयोग को लेकर स्पष्ट दृष्टिकोण प्राप्त होगा।
- 700 स्कूलों में कहानी-कथन उत्सव के प्रभावी संचालन की योजना और समझ विकसित होगी।
- बच्चों और शिक्षकों के संवाद में वृद्धि के लिए नई रणनीतियाँ विकसित की जाएंगी।

परिशिष्ट-4

बच्चों की कहानियों और चित्रों के संकलन के नमूने

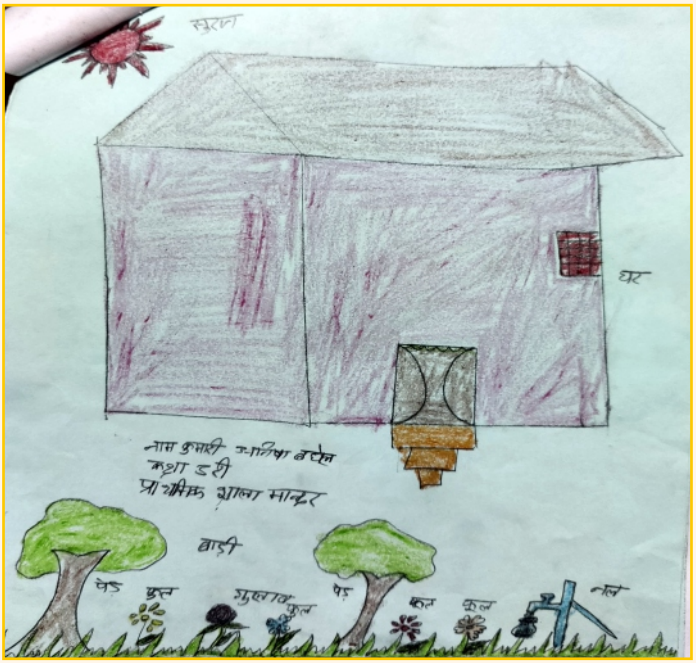

सूरज
घर
नाम कुमारी
कक्षा 3री
प्राथमिक शाला मान्दर
बाड़ी
पेड़
फूल
गुलाब फूल
पेड़
फूल
फूल
नल

हसिना, कक्षा - पांचवी

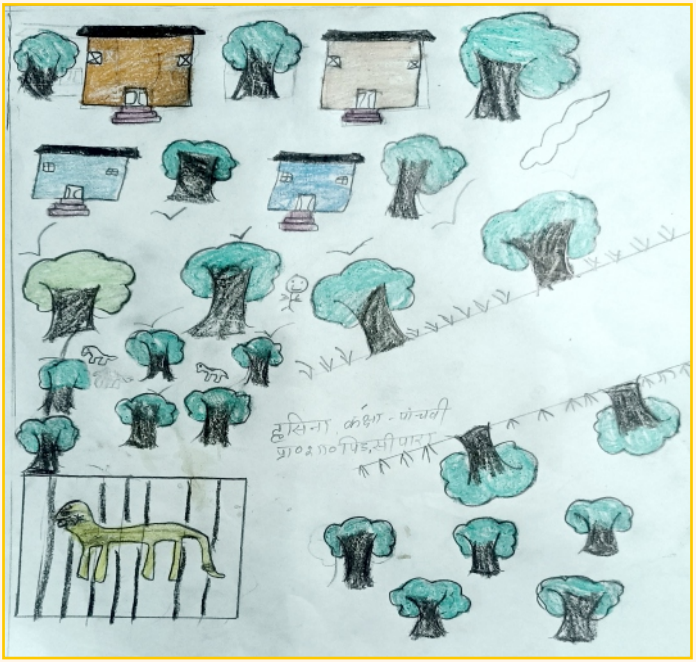

(पिंजरे में बंद शेर)

नाम - ~~संबोधि प्रेरणा~~ संध्या

एक गाँव में एक घना जंगल था वहा एक शेर रहता था। जंगल में जीतने पशु-पक्षी भेड़ बकरी जीतने भी थे शेर से ~~परे~~ जानवर पशु-पक्षी परेशान हो गए थे। जंगल के पास एक गाँव था, गाँव के लोग रात को बाहर नहीं निकलते थे। गाँव के लोग भी परेशान हो गए थे। गाँव के लोग एक योजना बनाए और एक ~~ब~~ पिंजरा में शेर को बंद कर दिए और पास में एक घने जंगल में छोड़ दिए और गाँव के लोग खुशी से जीने लगे,

कु० संध्या कक्षा - 4थी

प्रा० शा० पिड़सीपारा (बस्तर)

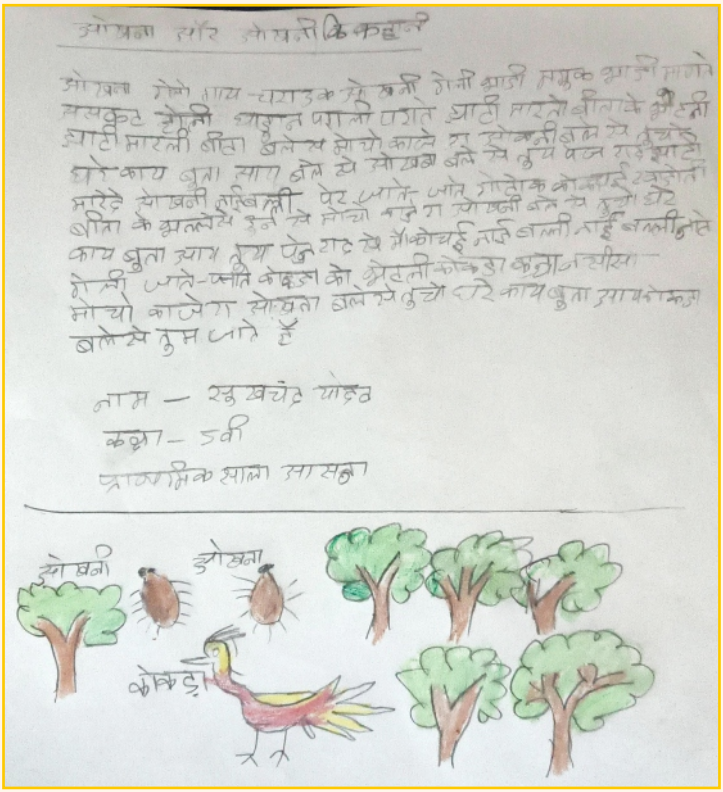

ओखना और ओखनी कि कहानी

ओखना गेलो गाय-चराउक से खनी गेली आडी समुक आडी मागते ससकुट होली धाङुन पराली पराते आटी मारतो बीताके आटी आटी मारली बीता बले से मोचो काले रा ओखनी बले से तुचो घरे काय बुता आय बले से ओखना बले से तुय पज रहे आटी मारेदे ओखनी तखिबली पेर जाते-जाते गोटोक कोकड़ा रखडोते बीता के भुलले से इन ने मोचो गाड़े रा ओखनी बले से तुचो घरे काय बुता आय तुय पेड़ राट से मैं कोचई नाई बलली नाई बलली होते गेली जाते-जाते कोकड़ा को भेटली कोकड़ा कथ्था नसीसा मोचो काजे रा ओखना बले से तुचो घरे काय बुता आय कोकड़ा बले से तुम जाते हैं

नाम — रुखचंद यादव

कक्षा – 5वी

प्राथमिक शाला आसना

परिशिष्ट–5

कहानी कथन उत्सव की कुछ अन्य झलकियाँ

कहानी कथन उत्सव उन्मुखीकरण कार्यशाला

उत्सव में भाग लेने के लिए अपने गाँव से नोडल केंद्र पर आते हुए बच्चे

कहानी कथन उत्सव की औपचारिक शुरुआत करते हुए
शिक्षक जनप्रतिधि और समुदाय के सदस्य

कहानी वाचक बच्चों को कहानी सुनाते हुए

कहानी वाचक बच्चों को कहानी सुनाते हुए

कहानी सुनने के बाद उन पर चित्र बनाते और कहानी लिखते बच्चे

कहानी सुनने के बाद उन पर चित्र बनाते और कहानी लिखते बच्चे

बच्चों द्वारा कहानी कथन उत्सव में बनाए गए चित्रों और कहानियों का प्रदर्शन

बच्चों द्वारा कहानी कथन उत्सव में बनाए गए चित्रों और कहानियों का प्रदर्शन

कहानी कथन उत्सव में खुशी से मुस्कुराते चेहरे

ग्रन्थ सूची

Agnihotri, R. K. (2014). Multilinguality, education and harmony. International Journal of Multilingualism, 11(3), 364–379. https://doi.org/10.1080/14790718.2014.921181

Annual Status of Education Report (Rural) 2018. (2019). ASER Centre. https://img.asercentre.org/docs/ASER%202018/Release%20Material/aserreport2018.pdf

Basso, K. H. (1996). Wisdom sits in places: Landscape and language among the Western Apache. University of New Mexico Press.

Benson, C. (2013). Towards adopting a multilingual habitus in educational development. In C. Benson & K. Kosonen (Eds.), Language issues in comparative education (pp. 283–299). Brill. https://brill.com/display/book/edcoll/9789462092181/BP000017.xml

Berkes, F. (2018). Sacred ecology: Traditional ecological knowledge and resource management. Routledge.

Bruner, J. (1990). Acts of meaning. Harvard University Press.

Cummins, J. (2000). Language, power and pedagogy: Bilingual children in the crossfire. Multilingual Matters.

Finnegan, R. (1977). Oral poetry: Its nature, significance, and social context. Cambridge University Press.

García, O., & Lin, A. M. Y. (2017). Translanguaging in bilingual education: Recent developments. In O. García, A. M. Y. Lin, & S. May (Eds.), Bilingual and multilingual education (pp. 117–130). Springer.

Goody, J. (1987). The interface between the written and the oral. Cambridge University Press.

Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education.

Heath, S. B. (1983). Ways with words: Language, life and work in communities and classrooms. Cambridge University Press.

Heugh, K., Benson, C., Bogale, B., & Yohannes, M. A. G. (2007). Final report: Study on medium of instruction in primary schools in Ethiopia. Ministry of Education.

Hymes, D. (1996). Ethnography, linguistics, narrative inequality: Toward an understanding of voice. Taylor & Francis.

Jhingran, D. (2009). Hundreds of home languages in the country and many in most classrooms: Coping with diversity in primary education in India. In T. Skutnabb-Kangas, R. Phillipson, A. K. Mohanty, & M. Panda (Eds.), Social justice through multilingual education (pp. 250–267). Multilingual Matters.

Jhingran, D. (2019). Early literacy and multilingual education in South Asia. United Nations Children's Fund Regional Office for South Asia. https://www.unicef.org/rosa/reports/early-literacy-and-multilingual-education-south-asia

Jhingran, D. (2021). Policy, advocacy and programs for multilingual education: Kick-starting change at scale. In C. Benson & K. Kosonen (Eds.), Language issues in comparative education II (pp. 301–321). Brill.

Jhingran, D. (2023). Conversations/Interview with Dhir Jhingran. Contemporary Education Dialogue, 20(2), 236–255. https://doi.org/10.1177/09731849231185

Jhingran, D. (2024). Multilingual education in practice: A reality check. Language and Language Teaching, 25, 131–143. https://llt.org.in/wp-content/uploads/2024/05/Multilingual-Education-in-Practice-A-Reality-Check-Issue-25.pdf

Mishra, M. K. (2024). Erai Erai Multilingual Education in Tribal Schools of India: Voices from Below. Manak Publication Pvt. Limited.

National Council of Educational Research and Training. (2005). National curriculum framework 2005. NCERT.

Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). District census handbook: Bastar (Series 22, Part A). Ministry of Home Affairs, Government of India.https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/360/download/1088/DH_2011_2215_PART_A_DCHB_BASTAR.pdf

Ong, W. J. (1982). Orality and literacy: The technologizing of the word. Routledge.

Schank, R. C. (1995). Tell me a story: Narrative and intelligence. Northwestern University Press.

Skutnabb-Kangas, T., & McCarty, T. L. (2008). Key concepts in bilingual education: Ideological, historical, epistemological, and empirical foundations. In J. Cummins & N. H. Hornberger (Eds.), Encyclopedia of language and education (Vol. 5, pp. 3–17). Springer.

Smith, L. T. (2012). Decolonizing methodologies: Research and indigenous peoples. Zed Books.

UNESCO. (2003). Education in a multilingual world. UNESCO Publishing.

UNESCO. (2005). First language first: Community-based literacy programmes for minority language contexts in Asia. UNESCO Bangkok.

Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes. Harvard University Press.

Wilson, S. (2008). Research is ceremony: Indigenous research methods. Fernwood Publishing.

World Bank. (2021). Loud and clear: Effective language of instruction policies for learning. World Bank. https://documents1.worldbank.org/curated/en/517851626203470278/pdf/Effective-Language-of-Instruction-Policies-for-Learning.pdf

सम्पर्क करें:

लैंग्वेज ऐंड लर्निंग फाउंडेशन

प्रथम तल, बी-ब्लॉक, प्लाट नं. 8, बालाजी एस्टेट,

गुरू रविदास मार्ग, कालकाजी, नई दिल्ली-110019

वेबसाइट: https://languageandlearningfoundation.org

ई-मेल: info@languageandlearningfoundation.org